वर्ष १४, संख्या १०

"भूगोल"

"BHUGOL"
Feb. 1938

चीनी-एटलस

सम्पादक

रामनारायण मिश्र बी० ए०
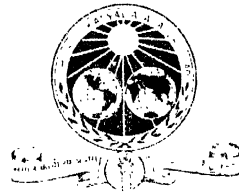
वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
इस अंक का ॥)

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian: Rs. 3/-
Foreign: Rs. 5/-
Single copy As. 8

प्रकाशकः—

"भूगोल"-कार्य्यालय, प्रयाग

सम्पादकीय

चीन अंक से उस विशाल देश का संक्षिप्त परिचय "भूगोल" के पाठकों को मिल ही गया होगा। चीन-जापान युद्ध के सम्बन्ध में इतने नये नये स्थानों का नाम आता है कि साधारण मनुष्य को उनकी स्थिति और महत्व का ठीक ठीक पता नहीं लग सकता। इसीलिये इस बार चीनी एटलस प्रकाशित करने को आवश्यकता प्रतीत हुई। इसमें दो (दूसरे और तीसरे) पृष्ठों पर चीन देश का विवरणात्मक नक़शा दिया गया है। २४ पृष्ठों में चीन के प्रान्तों के बड़े बड़े नक़शे दिये गये हैं। इनके अन्त में नक़शों के पृष्ठों का हवाला देकर प्रान्तों का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है। इसके बाद समय समय पर बदलने वाले चीन के प्राचीन राजनैतिक मानचित्र, प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ और चीनी इतिहास के कुछ चित्र दिये गये हैं। अन्त में चीन की उपज और व्यापार आदि के मानचित्र और खाके दिये गये हैं। इन पर नजर डालते ही चीन की आर्थिक स्थिति का ठीक ठीक पता लग जाता है। चीन-अंक और चीनी एटलस से अभागे चीन देश की समस्याओं को समझने में सुविधा होगी। चीन अंक और चीनी एटलस का अलग अलग मूल्य आठ आठ आना है। दोनों का एक साथ मूल्य बारह आने रक्खा गया है। आशा है हिन्दी प्रेमी इस सुविधा से लाभ उठावेंगे।

विषय-सूची

क्वांग्सी

संकेत:-

- ---- प्रान्तीय सीमा
- राजधानी
- प्रान्तीय नगर
- स्वाधीन चाओ
- स्वाधीन त्रिंग
- चाओ शहर
- त्रिंग शहर
- ज़िले का नगर

इञ्ची = १ मील

० ५० १०० १५०

चेकयांग
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाओ
स्वाधीन तिंग
चाओ शहर
तिंग शहर
जिले का नगर

क्यांगटुंग
संकेत:-
----प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाओ
स्वाधीन तिंग
चाओ शहर
तिंग शहर
ज़िले का नगर
३ ली = १ मील
ली ० ५० १०० १५० ली

क्यांग्सु
संकेतः-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाओ
स्वाधीन तिंग
चाओ शहर
तिंग शहर
ज़िले का नगर
१०० १५० मी
हैचाओ
नाननुंगचाओ
चुंगमिंग
चुंगमिंग द्वीप
जुकाओ
तैचाओ
यांगचाओ
सिन्हुआ
तुंगताई

क्यांगसी
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
नानचंग
कानचाओ
चेनान
लुंगनान

हूनान
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाऊ
स्वाधीन तिंग
चाऊ शहर
तिंग शहर
ज़िले का नगर
३ ली - १ मील
० ५० १०० १५० ली

सेचुआन
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाओ
स्वाधीन तिंग
चाओ शहर
तिंग शहर
ज़िले का नगर
३ ली = १ मील
ली ० ५० १०० १५०
सुं ग पा न्ति ग शू
या चा ओ शू
पा न्तिं ग
लुं ग न फू
पा ओ निं ग फू
तुं ग चा ओ फू
चुं ग किं ग फू
निं ग यु आ न फू

हूपे
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
चाओ शहर
ज़िले का नगर
३ ली = १ मील
० ५० १०० १५० ली

यूनन
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाओ
स्वाधीन तिंग
चाओ शहर
तिंग शहर
ज़िले का नगर
३ ली—१ मील

शेन्सी
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाओ
स्वाधीन तिंग
चाओ शहर
तिंग शहर
जिले का नगर
येनानफू
फूचाओ
पिनचाओ
शांगचाओ
स्यानफू
३ ली—१ मील
ली ० १०० २०० ३००

कान्सू
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाओ
स्वाधीन तिंग
चाओ शहर
तिंग शहर
ज़िले का नगर
३ ली=१ मील
ली ० २०० ४०० ६००
आ न्सी चा ओ
आन्सीचाओ
मि नि ग फ़ु
लां चा ओ फ़ु
लांचाओफ़ु
नि ग स्या फ़ु
पिंग ल्यांग फ़ु
चिं ग यां ग फ़ु
कुंग चांग फ़ु
चि चा ओ
चि न चा ओ

शांटुंग
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
० ५० १०० १५० ली
सिनानफू
तेंगचाओफू
चेफू
वैहाइवी
लिंचू
सूचेई

शान्सी
३ ली—१ मील
ली ० १०० २०० ३००
संकेत:-
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाओ
स्वाधीन तिंग
चाओ शहर
तिंग शहर
जिले का नगर

सिंक्यांग
संकेत:–
प्रान्तीय सीमा
राजधानी
प्रान्तीय नगर
स्वाधीन चाओ
स्वाधीन तिंग
चाओ शहर
तिंग शहर
ज़िले का नगर
3 ली = १ मील
ली ० ५० १०० १५०
जाईसा झील
तार्बगताई
चिंग हो तिंग
इलीफ़ू
तिहाफ़ू
तिहाफ़ू
तुरफ़ान
तुनहुआंग तिंग
लावनार
चर्चेन दरिया
यारकन्द नदी
यारकन्द
पूली
ख़ोतान
हाम्पी
कुचे
करगालिक
कराकोरम पर्वत

मंगोलिया
पैमाना
0 100 200 300 मील
मोटर मार्ग
मुस्तागदर्रा
बैकालझील
इर्कुटस्क
मंचूरिया
बीस्क
कोमगोल
ख्वाकेम
ओरिखो
तन्नू पर्वत
खाथ्या
सेलेंगा
ओरोखोन
कोतन्दा
उलनख्वोम
उगा
मुओक
वारुनकुर्या
केरुलेन
कोब्डो
उल्यासूताई
तुल्ता
अल्ताई पर्वत
सांगनलूक
जैसान्स्क
चुगूचक
बुलुन्तोखोई
शाइर पर्वत
तीहाफू
नारन
ओर्गीन
उदे
सैरूसु
चिहफेंग
डोलोनार
कोश्यात
रेगिस्तान
कोनित्शो
सेमी
गोबी
का
इलीसिन
बेइनकुदूक
वै
विल्गीकी
पीकिंग
पाउसेबोलोंग
खारासोतो
हागाकिन
तैतुन्स्जी
शिंचाओ
तिगयुआनपिंग
निंगस्याफू
ह्वांगहो (पीली नदी)
हैयुआन
चेनफाऊ
मं
गो
लि
या
भी
त
री

तिब्बत
पैमाना
० १०० २०० ३००
१५३ मील = १" इंच
सुचाइननार
नानशान पर्वत
पुहाइनगोल
कोकोनार
सेदाम
दुलदल
साचा
आलगनार
चारगनार
मार्को पोलो श्रेणी
आराश
कोकोशिली श्रेणी
दुंगबूरी श्रेणी
बुकामाग्ना श्रेणी
लेंगनोक
कराकोरम पर्वत
देमचोक
गरगन्स
खोखोसिली
कांगचीनार
दुंगबूरा
लाल लवण झील
पतचोक
(पोलो नदी)
न्याम्चो
थूदेनगम्बा
याकिन्हापचीगा
पार्दिंग
ति
ब्ब
त
यामातोध
सेलिंगसो
श्याब्देन
रवदान
मुरनांग
लगधा
अदन्सो
सौकुतसो
तांगों गांग्री
गांगसेसो
क्यारिंगसो
मोक्यूमो
तेंग्रीनार
मानसरोवर झील
तुकसुम
खालाम्बा दर्रा
लासा
ब्रह्मपुत्र नदी
ल्हारुगो
अलादो
पेम्बा
जम्बों
छम्दो
जया
रांगो
नमचा बरवा
२५४४५
रान्या
तांगशू
मांगजोंग
पाल्टी झील
दोंगकर
शिगात्से
एवरेस्ट पर्वत
२९१४१
गंडक नदी
कोशी नदी
सारदा नदी
छुम्दोचो नदी
दुगचूलाग नदी
दीचू नदी
३५
३०
४०
८०
८५
९०
९५
१००

समस्त प्रान्तों का संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जाता है। पृष्ठ २ और ३ में चीन का बड़ा नक्शा है, वह स्पष्ट ही है। प्रत्येक प्रान्त के नक्शे की पृष्ठ संख्या उस प्रान्त के वर्णन के नीचे दे दी गई है। —सम्पादक

क्वांग्सी

क्वांग्सी (७७,००० वर्ग मील, जन संख्या १,१३,००,०००) प्रान्त पहाड़ी है। पहाड़ दक्षिण से उत्तर पूर्व की ओर चले गये हैं। वेस्ट (पश्चिमी) नदी या सीक्यांग और इसकी सहायक नदियों की घाटियाँ उपजाऊ हैं। दक्षिण की ओर जलवायु अधिक ऊष्ण है। धान, गन्ना, फल, अनाज, बांस, कासिया (Cassia) और अनीसीड (Aniseed) प्रधान उपज हैं। स्टार एनिस (Star Anise) की उपज के लिये क्वांग्सी संसार भर में प्रसिद्ध है। सुरमा, कोयला, टीन, लोहा एस्बेस्टास (जो आग में नहीं जलता है) और गेलीना मुख्य खनिजें हैं। रेलों के अभाव से यहाँ की खनिज-सम्पत्ति का विकास न हो सका। नानिंग (७५००० से ऊपर) में पटाखे और चमड़े का सामान बनाया जाता है। वूचाओ में मोजे, रेशम और शीशे का कारबार है। यहाँ रेशम के कीड़े की एक ऐसी जाति होती है जो कपूर के पेड़ की पत्तियाँ खाता है। इसकी अँतड़ियों से मछली पकड़ने की डोरी (Line) बनाई जाती है। क्वेलिन (७५००० से ऊपर) शहर इस प्रान्त की राजधानी है। पृष्ठ नम्बर १

चेक्यांग

चेक्यांग प्रान्त का क्षेत्रफल ३७,००० वर्ग मील और जन-संख्या २ करोड़ २० लाख है। प्रान्त के उत्तरी और उत्तरी-पूर्वी भाग में अधिक घनी आबादी है। उत्तरी भाग में विशाल उपजाऊ मैदान है। दक्षिण और पश्चिम में पहाड़ हैं। धान, चाय, रेशम, कपास, गेहूँ, सन, नील, ईख, और फल यहाँ ख़ूब होते हैं। चाय के पौधे पहाड़ियों पर लगे हैं। यह प्रान्त रेशम के लिये बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ साल में दो बार रेशम निकाला जाता है। कपास बढ़ रही है। शाओलिंग और निंगपू के बीच वाले भाग में बहुत बढ़िया कपास होती है। चेक्यांग प्रान्त में लोहा, कोयला, फिटकरी और सोप स्टोन (संलखरी) बहुत है। लेकिन निकाला कम जाता है।

इस प्रान्त का प्रधान कारबार रेशम है। हूचाओ का कच्चा रेशम बढ़िया होता है! हांगचाओ में सर्वोत्तम रेशमी कपड़े बनते हैं। निंगपू में सूत कातने और सूती कपड़ा बुनने की कई मिलें हैं। काशिंग में तांबे और पीतल के बर्तन अच्छे बनते हैं। हांगचाओ में कागज, पंखे, छाते, ब्रुश, (चीनी कलमें) बहुत बनते हैं।

शाओहिंग में चावल की शराब बहुत बढ़िया बनती है और बाहर भी भेजी जाती है। वेंचाओ में पत्थर का सामान बनता है।

इस प्रान्त में नदियों और नहरों का जाल पुरा हुआ है। शङ्घाई और निंगपू के बीच में स्टीमर चला करते हैं।

हांगचाओ (आबादी ६ लाख) नगर इस प्रान्त की राजधानी और ट्रीटी पोर्ट है। शाओहिंग (ट्रीटी पोर्ट), निंगपू (ट्रीटी पोर्ट) और हूचाओ शहरों की जन संख्या १ लाख से ऊपर है। लांगचो, वेंचाओ (ट्रीटी पोर्ट) काशिङ्ग, चूचाओ और किनह्वाफू दूसरे प्रसिद्ध नगर हैं। यहां के निवासी बड़े साहसी और बहादुर समुद्री मल्लाह हैं और मन्दरिन भाषा बोलते हैं। पृष्ठ नम्बर ४

क्वांगटंग[*]

क्वांगटंग (१००,००० वर्गमील, जनसंख्या ३ करोड़ ७२ लाख) प्रान्त सीक्यांग (पश्चिमी नदी) को छोड़ कर शेष भाग में पहाड़ी है। घाटियाँ और डेल्टा का प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। यहाँ साल में तीन फसलें होती हैं। समुद्र तट खूब कटा फटा है। बन्दरगाह अच्छे हैं। इसी से सीक्यांग नदी के डेल्टा और तटीय प्रदेश में अत्यन्त घनी आबादी है। जलवायु ऊष्ण है। रेशम, चावल, गन्ना, तम्बाकू, कामिया, फल, तरकारी, बांस, चाय, अदरख, चटाई बुनने के सरकंडे और सन बहुत होता है। धान प्रधान उपज है। रेशम मुलायम और चमकीला होता है और साल में सात आठ बार तैयार होता है। यहाँ की नारंगी और लीची बहुत प्रसिद्ध हैं। अच्छा लोहा और कोयला बहुत मिलता है। टंगस्टन, मेंगनीज़, मोलिबडेनम और सुरमा भी बहुत है। लेकिन अच्छे मार्गों की कमी होने से निकाला कम जाता है। रेशम बुनने, चटाई बुनने और धान कूटने के कई कारखाने हैं। हाथी दाँत पर नक्काशी करने, चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने लकड़ी पर रंगसाजी करने का काम होता है। केन्टनी लोग बड़े उन्नतिशील हैं। विद्यार्थियों को छोड़ कर केन्टन से ही अधिक तर साधारण चीनी लोग अमरीका को गये थे। समुद्र तट के बन्दरगाहों के बीच में जहाज चला करते हैं। केन्टन से समशुई, केन्टन से शुईचाओ, केन्टन से कोलून (हांग कांग) और हानकाओ को रेलें गई हैं। केन्टन प्रान्त भर में सब से बड़ा (१९ लाख) नगर, ट्रीटीपोर्ट और राजधानी है। १ लाख और पाँच लाख के बीच की आबादी वाले शहरों में फातशान, चाओचाओफू, हांगकांग शेक्युङ्ग, शेकी, समशुई, स्युलान और कोंगमून हैं। स्वाटाओ, मकाओ, होकशान और शाफिङ्ग नगरों की जन संख्या २५००० के ऊपर है। केन्टन, स्वाटाओ, कोंगमून, कोलून, लप्पा, पाखोई, शमशुई हांगकांग (ब्रिटेन ने ले लिया), मकाओ (पुर्चगाल ने ले लिया) और क्वांगचाओ (फ्रांस ने ले लिया) ट्रीटी पोर्ट हैं।

पृष्ठ नम्बर ५

फूकेन

फूकेन प्रान्त का क्षेत्रफल ४६ ००० वर्ग मील और जनसंख्या १ करोड़ ३० लाख है। समुद्र-तट के पास और मीन नदी की घाटी में सबसे अधिक घनी आबादी है। यह प्रान्त पहाड़ी है। पहाड़ समुद्र-तट के समानान्तर चले गये हैं। तट कटा फटा है। खाड़ियाँ कई हैं। सान्तुआओ, फूचाओ और एमाय सुन्दर बन्दरगाह हैं। यहाँ की जलवायु शीतोष्ण कटिबन्ध से कुछ गरम लेकिन ऊष्णकटिबन्ध से ठंडी है। धान, लकड़ी, चाय और फल यहाँ की प्रधान उपज हैं। फलों में नारंगी, जैतून लुंगवान लीची और बेर बहुत होते हैं। बाँस के मुलायम हरे किल्ले खाने के काम आते हैं। गन्ना, गेहूँ और सकरकन्द की खेती होती है। कोयला, तालक (Talc) चिकनी चीनी मिट्टी और चूने का पत्थर बहुत निकाला जाता है। मालिब डेनम (Molyb denum) सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा, और ग्रेफाइट (पेंसिल का मसाला) भी कई भागों में मौजूद है। लेकिन अभी निकाला नहीं जाता है।

खेती के बाद सब से अधिक मनुष्य लकड़ी काटने और लकड़ी बाहर भेजने के काम में लगे हुए हैं। बाँस से कागज बनाया जाता है। टिनफायल (Tin foil), कागज से छाता बनाने, दियासलाई और साबुन के काम में कुछ लोग लगे हैं। कुछ लोग चाय को बाहर भेजने, नाव बनाने और मछली मारने का काम करते हैं। फूचाओ में चमड़ा, कपूर साफ करने, मोजा तौलिया बुनने और रबड़ के जूते बनाने के कारखाने हैं। एमाय में फलों से मुरब्बा बनाने का भी काम होता है। एमाय (१ लाख) बन्दरगाह

[*] नक़्शे में भूल से क्यांगटंग छप गया है। कृपया सुधार लें।

से बहुत से चीनी मजदूर प्रशान्त महासागर के द्वीपों और सिंगापुर को जाया करते हैं। यह एक ट्रीटीपोर्ट है। फूचाओ शहर प्रान्त भर में सब से बड़ा (५ लाख) और राजधानी है। फूचाओ तक मीन नदी इतनी गहरी है कि यहाँ तक समुद्री जहाज आ जाते हैं। यह भी ट्रीटीपोर्ट है। यांगचाओ और चुनचाओफू दूसरे प्रसिद्ध नगर हैं। उत्तरी फूकेन के लोग घर छोड़ना पसन्द नहीं करते हैं। दक्षिणी भाग के लोग बड़े साहसी हैं।

पृष्ठ नम्बर ६

क्यांग्सू

क्यांग्सू (३८,६०० वर्ग मील, जन संख्या ३ करोड़ ४० लाख) में कैमेन का सिरा और सुंगमिंग द्वीप और भी अधिक घना बसा है। सारा प्रान्त विशाल कछारी मैदान है। दक्षिण में १२० मील लम्बा और ६० मील चौड़ा यांग्जी का डेल्टा है। प्रान्त की जमीन नीची है। कहीं कहीं दलदल और अनूप हैं लेकिन यहाँ की जमीन बड़ी उपजाऊ है। रेशम, कपास, धान, बीन, मटर, गेहूँ, बाँस, तरकारी और फल यहाँ की प्रधान उपज हैं। वूसी का रेशम दुनिया भर में सर्वोत्तम होता है। कपास की खेती हर साल बढ़ती जा रही है। सूत कातने और कपड़ा बुनने के ७२ कारखाने हैं जो अधिक तर शंघाई में हैं। यहीं आटा पीसने, बिजली तैयार करने, तेल पेरने, दिया सलाई, कागज, लकड़ी, मोमबत्ती, बल्ब, साबुन, सीमेंट, शराब, शक्कर, ब्रुश और सोड़ावाटर बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं। वूसीह, नानकिंग, और सूचाओ में रेशम बुना जाता है। इस प्रान्त की सभी नदियों में स्टीमर चलते हैं। नहरों का जाल सा बिछा हुआ है। शंघाई से नानकिंग, वूसुंग और हांगचाओ को रेलें गई हैं। सड़कें अच्छी नहीं हैं। शंघाई (१८ लाख) सूचाओ (६ लाख) प्रसिद्ध शहर हैं। नानकिंग जापानी हमले तक चीन की राष्ट्रीय सरकार की राजधानी रहा। हमले के समय राजधानी यहां से उठ कर चुंगकिंग को चली गई। वूसीह, चिक्यांग, और यांगचाओ प्रसिद्ध नगर हैं। शंघाई, नानकिंग, सूचाओ और वूसुंग ट्रीटी पोर्ट भी हैं। प्रान्त में मन्दरिन चीनी और शंघाई की उपभाषा (चीनी) बोली जाती है।

पृष्ठ नम्बर ७

आन्हवे

आन्हवे का प्रान्त अपने देश के संयुक्त प्रान्त का आधा (५५००० वर्गमील) है। इसकी जनसंख्या २ करोड़ है जो अपने प्रान्त की जन-संख्या के आधे से कुछ कम है। उत्तरी भाग में यह प्रान्त सब से अधिक घना बसा है। यांगजी के दक्षिण में यह प्रान्त पहाड़ी हो गया है। बीच वाला भाग बड़ा उपजाऊ है। ह्वे नदी के उत्तर का मैदान कभी अकाल और कभी बाढ़ से पीड़ित रहता है। धान, कपास, गेहूँ और चाय यहाँ की प्रधान उपज हैं। सोयाबीन, सोरगम, तम्बाकू और ज्वार बाजरा भी पैदा होता है। इस प्रान्त के कई भागों में कोयला पाया जाता है। यहाँ लोहा बहुत अच्छा है।

आन्हवे प्रान्त में देशी और चीनी स्याही बहुत तैयार की जाती है। दक्षिणी भाग में कागज बनाया जाता है। वुहू में धान कूटने और आटा पीसने की कई मिलें हैं।

आंकिङ्ग (राजधानी) वुहू (ट्रीटी पोर्ट) और पोचाओ नगरों की जन संख्या १ लाख से ऊपर है। दूसरे प्रसिद्ध नगर पेंगू (ट्रीटी पोर्ट) तातुङ्ग, ह्वेचाओ और लूचाओफू हैं। इस प्रान्त के रहने वाले भोले शान्त और मेहनती हैं। वे मन्दरिन (चीनी) भाषा बोलते हैं।

पृष्ठ नम्बर ८

क्यांग्सी

क्यांग्सी प्रान्त (६८,००० वर्ग मील, जन संख्या २३ करोड़) पोयांग झील के पास वाले भागों को छोड़ कर शेष पहाड़ी है। झील के पास वाले भागों में दलदल भी बहुत है। प्रान्त के बहुत बड़े भाग का पानी कान नदी बहा ले जाती है। झील के पास वाले भाग और कान नदी की घाटी में आबादी घनी है। यहाँ की जलवायु बड़ी नम रहती है। धान, चाय, तम्बाकू, बाँस, मटर, फल, नील और अनाज यहाँ की प्रधान उपज हैं। कपूर के पेड़ बहुत से भागों में उगते हैं। रेमी (Ramie) भी बहुत होता है। इस प्रान्त में कोयला और चिकनी चीनी मिट्टी की कई खानें है। पिंगस्यांग की खानों से हर साल १० लाख टन से अधिक कोयला निकलता है। चीनी मिट्टी का कारबार बहुत पुराना और प्रसिद्ध है। घास से जितना कपड़ा सारे चीन में बनता है उसका आधा अकेले क्यांग्सी प्रान्त में तैयार होता है।

पोयांग झील और कान नदी में स्टीमर चला करते हैं। कान नदी की सहायक नदियों में देशी नावें चलती हैं। नानयांग से क्यू क्यांग और पिंगस्यांग से चूचांग को रेल गई है। नानचांग (१ लाख से ऊपर) राजधानी है। क्यू क्यांग ट्रीटी पोर्ट है। कानचाओ क्यानफू और किंगतेचेन दूसरे प्रसिद्ध नगर हैं। प्रान्त की भाषा मन्दरिन (चीनी) है।

पृष्ठ नम्बर ९

हूनान

इस प्रान्त का क्षेत्रफल ८३,००० वर्ग मील और जन संख्या ३ करोड़ है। नदियों की घाटियों और तुंगतिंग झील के पड़ोस में आबादी बहुत घनी है। यह प्रान्त पहाड़ी है। दक्षिण और पश्चिम में पहाड़ और भी अधिक हैं। तुङ्गतिङ्ग झील (७५ मील लम्बी और ६० मील चौड़ी) में चार नदियां गिरती हैं। चाँगशा के दक्षिण में मैदान है।

हूनान प्रान्त में कई तरह की खेती होती है। धान प्रधान है। चाय, सोयाबीन, रेमी (Ramie), तिल, बांस, लकड़ी का तेल, वनस्पति घी, कपास, तम्बाकू, तरबूज, फल और गेहूँ बहुत होता है। यहाँ के सुअर भी (मांस के लिये) प्रसिद्ध हैं। खनिज सम्पत्ति भी बहुत है। सुरमा, सीसा, जस्ता कोयला, लोहा, मेंगनीज, टीन और पारा प्रधान खनिज हैं। खनिज खोदना यहाँ का प्रधान कारबार है। बाँस से कागज, घास से कपड़े, रेशम की कढ़ाई और सूती कपड़ा (नानकीन) बनाने का काम बहुत होता है। हूनान के हैम (Ham) चीन भर में पहुँचते हैं। बाँस से कई तरह की चीजें बनती हैं। चाँगशा प्रधान कारबारी केन्द्र है।

झील में और चाँगशा और हानकाओ के बीच में स्टीमर चला करते हैं। स्यांग, ली और येन नदियों में नावें चला करती हैं। शीतकाल में गहराई कम हो जाने से नावों का चलना बन्द हो जाता है। चाँगशा रेल द्वारा हानकाओ नगर से जुड़ा हुआ है। यहाँ से एक लाइन केन्टन को गई है। चाँगशा (१ लाख से ऊपर) राजधानी और ट्रीटीपोर्ट है। चाँगते, और स्यांगतान दूसरे प्रसिद्ध नगर हैं। योचाओ ट्रीटी पोर्ट है।

पृष्ठ नम्बर १०

सेचुआन

सेचुआन (२,२०,००० वर्ग मील, जन संख्या ५ करोड़) प्रान्त में चेंग्ट मैदान (जो ९० मील लम्बा और ४५ मील चौड़ा है) अत्यन्त घना बसा है। प्रति वर्ग मील में २००० से अधिक मनुष्य रहते हैं। प्रान्त का तीन चौथाई भाग पहाड़ी है। इसमें १८००० फुट ऊँचे पहाड़ चले गये हैं। लाल बालू और पत्थर के इस पठार का ढाल पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर है। दक्षिणी भाग की जलवायु कुछ कुछ ऊष्ण कटिबन्ध की है। जो उपज चीन के दूसरे भागों में होती है वह सब इस प्रान्त में होती है। रेशम, गेहूँ, गन्ना, तम्बाकू, कपास, रबर्ब (Rhubarb) बांस, चाय, जड़ी बूटी, लकड़ी का तेल प्रधान उपज हैं। चेंगटू मैदान में २००० वर्ष से सिंचाई की जा रही है। सेचुआन प्रान्त में लोहा, कोयला, तांबा, पारा, नमक और मिट्टी का तेल बहुत है। नमक के कुएँ बहुत गहरे हैं। कोई कोई कुआँ ३००० फुट गहरा है। सेचुआन प्रान्त से बाहरी प्रदेशों में जाने के लिये अकेला सुगम मार्ग यांगजी नदी है। इसी से यह प्रान्त प्रायः स्वावलम्बी रहा है। यहां नमक, गुड़, रेशम, ऊन, तम्बाकू, चमड़ा, तेल, कागज आदि प्रायः सभी आवश्यक चीजों को घरेलू ढंग से बनाने का काम होता है। चुङ्गकिङ्ग (८ लाख) प्रधान कारबारी नगर और व्यापार का केन्द्र है। चेंगटू (४ लाख) राजधानी है। क्यातिंगफू, फाओचाओ, वानसेन जेल्यूसिंग दूसरे बड़े नगर हैं। इनमें प्रत्येक की जनसंख्या १ लाख से ऊपर है। चुङ्गपा, बातंग, निंगपुआनफू, फेंगतूगेन, क्वेचाओफू, सुइफू, वेचाओफू नगरों की जन-संख्या २५००० से ऊपर है इस प्रान्त में कुछ चीनी और कुछ मूल निवासी रहते हैं।

पृष्ठ नम्बर ११

हूपे

हूपे (७१००० वर्गमील, जन संख्या २ करोड़) प्रान्त के ३० फी सदी भाग में पहाड़, और ६० फी सदी में जल है। केवल १० फी सदी भाग में रहने योग्य अच्छी जमीन है। यांगजी और हान नदियाँ इस प्रान्त को पार करती हैं। यहाँ असंख्य झीलों और नहरों का जाल सा बिछा हुआ है। मछलियाँ बहुत पकड़ी जाती हैं। धान, कपास, और बीन यहाँ की प्रधान उपज हैं। तिल, तम्बाकू, गेहूँ, रेमी (Ramie) और रेशम भी होता है। अंडा, अंडे से बने हुए पदार्थ, नट गाल (Nutgalls) वनस्पति और पशुओं की चर्बी बाहर भेजी जाती है। यहाँ की प्रधान खनिज लोहा और कोयला है। तायेह की लोहे की खानें चीन भर में सब से बड़ी हैं। हांगकाओ प्रान्त का कारबारी नगर है। लोहे और फौलाद के कारबारों के अतिरिक्त हानकाओ में सूती कारखाने, आटे की चक्कियाँ, सिगरट के कारखाने, तेल की मिलें, सीमेंट बनाने, कच्ची धातु का साफ करने और अंडों से तरह तरह की चीजें बनाने के कारखाने हैं। हानकाओ प्रान्त के व्यापार का भी केन्द्र है। यहां से कपास, लकड़ी का तेल, तिल, तम्बाकू, चमड़ा, खाल, चाय, लोहा, कच्चा रेशम, ब्रिसिल (Bristles) रेमी (Ramie) अंडे की बनी हुई चीजें, सन और नटगाल (Nutgall) बाहर भेजने का काम होता है। साल में आठ महीने समुद्री जहाज हानकाओ तक आते हैं। हांकाओ से ऊपरी यांगजी, हांगकाओ से चांगशा और हांकाओ से लाओहोकाओ (हान नदी पर) को भी स्टीमर जाया करते हैं। पेकिंग हांकाओ, और वूचांग-चांगशा रेलवे लाइनें प्रान्त को पार करती हैं। हांकाओ वूचांग, और हानचांग के "वूहान नगरों" की जन संख्या १५ लाख है। हांकाओ, इचांग और शासी ट्रीटी पोर्ट हैं। वूचांग राजधानी है। प्रान्त की भाषा मन्दरिन (चीनी) है।

पृष्ठ नम्बर १२

क्वेचाओ

क्वेचाओ (क्षेत्रफल ६७,००० वर्गमील, जन संख्या १ करोड़ १० लाख) प्रान्त दक्षिण और दक्षिण पूर्व में अधिक घना बसा है। प्रान्त का ⁵⁄₆ भाग पहाड़ी है। पठार की औसत ऊँचाई ४००० फुट से अधिक है। युआन और वू नदियों की घाटियां तंग और गहरी हैं। धान, तम्बाकू, लकड़ी का तेल, फल, अफीम और गेहूँ यहाँ की उपज हैं। वैसे प्रधान चीन भर में यह प्रान्त कम उपजाऊ गिना जाता है। कोयला पोटाश का शोरा, लोहा, जस्ता और पारा यहाँ की खनिज हैं। लेकिन बहुत से भाग की अभी तक ठीक ठीक पैमाइश नहीं हुई है।

युआन और वू नदियों में छोटी छोटी नावें चलती हैं। क्वेयांग (राजधानी) से यूनन, सेचुआन, हूनान, और क्वांग्सी को जाने वाली चारो सड़कें बहुत तंग हैं। क्वेयांग की जन-संख्या १० लाख है। अन्शुनफू (५०,०००) और सुनयी (४०,०००) दूसरे नगर हैं।

इस प्रान्त में लगभग ⅓ लोग चीनी और शेष दो तिहाई लोग मूल निवासी हैं। चीनी लोग मन्दरिन बोलते हैं। मूलनिवासियों की अलग अलग उपभाषायें हैं।

पृष्ठ नम्बर १३

यूनन

यूनन (१,४६,७०० वर्ग मील जन संख्या १ करोड़) प्रान्त सब का सब पहाड़ी है। पश्चिम की ओर ऊँचे और तंग पहाड़ हैं। पूर्व की ओर ऊंचा पठार है। पठार ही अधिक घना बसा है। अधिक ऊंचाई पर जलवायु अच्छी है। नदियों की निचली घाटियों में नर्मी और कुहरा छाया रहता है। यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यकर नहीं है। गरमी की ऋतु में पानी बरसता है धान प्रधान उपज है। गेहूँ और मकई की खेती भी होती है। यूनन प्रान्त में कई प्रकार की खनिजें हैं। लेकिन अभी केवल टीन निकाली जाती है। कहीं कहीं कपड़ा बुना जाता है। हैफांग-यूननफू रेलवे फ्रांसीसियों के अधिकार में है। नेरोगेज (छोटी) लाइन प्रधान रेलवे से कोचीन की टीन की खानों तक गई है। हैफांग और हांगकांग के बीच में स्टीमर चला करते हैं। यूननफू (१७५०००) राजधानी व्यापारिक केन्द्र और ट्रीटी पोर्ट है। मेंग्ज, होकाओ (पूर्व में) जेमाओ और तेंग्वे (दक्षिण पश्चिम में) दूसरे ट्रीटी पोर्ट हैं। प्रान्त में पश्चिमी मन्दरिन बोली जाती है। मूल-निवासी अपनी अपनी अलग उपभाषायें बोलते हैं।

पृष्ठ नम्बर १४

शेन्सी

शेन्सी (७५००० वर्ग मील, जन-संख्या ९४,५०,०००) के उत्तरी और दक्षिणी सिरों के आर पार ऊँचे ऊँचे पहाड़ चले गये हैं। वी नदी के उत्तर में बहुत ही उपजाऊ और नीचा पठार है। वी बेसिन को चीनी सभ्यता का जन्म स्थान कहते हैं। किसी समय यह प्रान्त बनों के लिये प्रसिद्ध था। लेकिन आजकल यहाँ के पहाड़ी ढाल एक दम नंगे हो गये हैं। वी और हान नदियों की घाटियाँ अत्यन्त उपजाऊ हैं। वी नदी की घाटी चीन भर में सर्वोत्तम कपास की उपज के लिये प्रसिद्ध है। गेहूँ, मकई, तम्बाकू, आलू, अलफा घास, बीन, जई, जौ, ज्वार बाजरा, मटर, गेहूँ, रेशम और तिलहन बहुत होता है। कहा जाता है कि शेन्सी प्रान्त में कोयला और मिट्टी का तेल बहुत है। रेलों और सड़कों के अभाव से अभी उसका ठीक ठीक पता नहीं लगा है।

इस प्रान्त में देशी पनचक्कियां बहुत हैं। खच्चर, भेड़, गाय बैल बहुत पाले जाते हैं। हान नदी में हान-चुंगफू नगर तक नावें चल सकती हैं। कुली और लद्दू जानवर हजारों की संख्या में सामान ढोते हैं। इस प्रान्त के लोग मन्दरिन (चीनी भाषा) बोलते हैं। श्यानफू प्रधान नगर (२ लाख) और राजधानी है।

पृष्ठ नम्बर १५

कान्सू

कान्सू (१,२५,००० वर्ग मील, जन संख्या ६० लाख) प्रान्त प्रधान चीन में सब से कम आबाद है। कान्सू प्रान्त में पहाड़ उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पश्चिम को चले गये हैं। दक्षिणी भाग अत्यन्त पहाड़ी है। पूर्व और उत्तर पूर्व में उपजाऊ लोयस (हवा के साथ लाई हुई मिट्टी) का पठार है। उत्तरी भाग भी जंगली और निर्जन है। यह प्रान्त बहुत ही खुश्क और ठंडा है। इस प्रान्त में खेती की अपेक्षा भेड़ और गाय बैल पालने का काम अधिक होता है। उपजाऊ भागों में गेहूँ, ज्वार, बाजरा, कपास तम्बाकू और मटर की खेती भी होती है। ऊन और चमड़े का काम प्रसिद्ध है। इस प्रान्त में एक भी रेलवे नहीं है। गरमी में ह्वांग हो नदी की सहायक नदियों में कुछ दूर तक नावें चलती हैं। सरदी में बरफ पर फिसलाकर बेड़ा खींचा जाता है। लानचाओफू (५ लाख) राजधानी है। सिनचाओ, सीमिंगफू और ल्यांगचाओफू दूसरे प्रसिद्ध नगर हैं। इस प्रान्त में मुसलमान बहुत हैं। उत्तरी भाग में मंगोल लोग रहते हैं। इस प्रान्त की भाषा पश्चिमी मन्दरिन है।

पृष्ठ नम्बर १६

शांटंग

शांटंग (५६,००० वर्गमील जन-संख्या ३ करोड़, १० लाख) का पूर्वी और दक्षिणी भाग पहाड़ी है। पश्चिमी भाग में बड़ा मैदान है। ह्वांगहो नदी उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। इस नदी में नावें नहीं चल सकतीं। इस नदी में अक्सर भयानक बाढ़ आती है। समुद्र तट कटा फटा है। सिंगताओ और चीफू सुन्दरगाह हैं।

शांटंग प्रान्त में खेती बहुत बढ़ी चढ़ी है। गेहूँ, कपास, ज्वार, बाजरा, शोरगम, मटर, तम्बाकू, मकई, रेशम, फल, सन, अखरोट और तरकारी बहुत होती है। कोयला और लोहा यहां की प्रधान खनिज हैं। इनको निकालने का काम नये ढंग से होता है। कपड़ा बुनने, पुंगी रेशम तैयार करने और तिनकों की टोकरियाँ बुनने का भी काम होता है।

शाही नहर इस प्रान्त का प्रधान जल मार्ग बनाती है। ह्वांगहो नदी में कभी कभी देशी नावें चलती हैं। टियन्टसिन से पोकाओ और क्याओचाओ से सीनान को रेल गई है। प्रान्त में लगभग ५०० मील लम्बी मोटर चलने योग्य पक्की सड़क है।

सीनान (३ लाख) राजधानी और ट्रीटी पोर्ट है। इसे अपने आप ही चीनियों ने विदेशियों के लिये खोल दिया। चीफू, सीनिंग, सिंगताओ, वीसेन और तैआनफू दूसरे प्रसिद्ध नगर हैं। इनमें प्रत्येक की जन-संख्या ७५००० से ऊपर है। चीफू, सिंगताओ, सीनान, लुङ्काओ और वाहाइवी ट्रीटीपोर्ट हैं।

पृष्ठ नम्बर १८

चिह्ली

चिह्ली प्रान्त का क्षेत्रफल १,१६,००० वर्ग मील है जो हमारे संयुक्त प्रान्त से कुछ बड़ा है। लेकिन इसकी आबादी ३ करोड़ २० लाख है। चिह्ली प्रान्त का उत्तरी पश्चिमी भाग पहाड़ी है। इस प्रान्त का बड़ा मैदान गरमी की ऋतु में बड़ा उपजाऊ रहता है। मानसूनी हवायें फसल उगाने के लिये समय से पानी बरसाती हैं। शीतकाल अत्यन्त ठंडा होता है। नदियाँ बरफ से जम जाती हैं। स्थल की ओर से आने वाली आंधियाँ धूल से लदी रहती हैं।

सोरगम, ज्वार बाजरा, मकई, सोयाबीन, गेहूँ, मटर, कपास और सन यहाँ की फसलें हैं। फलों में अखरोट आदि कई फल होते हैं। गेहूँ अन्तिम वर्षा के बाद बोया जाता है और गरमी के आरम्भ में काटा जाता है। ऊँची जमीन में कपास अच्छी होती है।

इस प्रान्त में कोयला, चूने का पत्थर और नमक बहुत है। टियन्टसिन कारबारी नगर है। यहाँ बिजली तथा ऊन, जूट, रुई आदि बुनने का कारबार बहुत है।

कोयले की खानों, आटा की चक्कियों सूती ऊनी मिलों और सिगरेट के कारखानों, रेलवे की दुकानों पर विदेशियों का शासन है। वे नदी और शाही नहर में नावें चला करती हैं।

टियन्टसिन (१३ लाख) प्रधान बन्दरगाह और पेकिंग (८ लाख) राजधानी है। पाओतिनफू की जनसंख्या १ लाख से अधिक है। टियन्टसिन, कालगन, कैह्लाचांग, हूलूताओ, चिफेंग, डोलोनगर और चिनवांताओ प्रधान नगर हैं। यहाँ मंगोल और मंचू लोगों में तातारी खून की अधिकता है। जो उत्तरी मन्दारिन भाषा बोलते हैं।

पृष्ठ नम्बर १९

शान्सी

शान्सी (८२,००० वर्ग मील, जन संख्या १ करोड़ १० लाख) लोयस मिट्टी का विषम पठार है। इसकी ऊँचाई २००० फुट से ४००० फुट तक है। कई पर्वत श्रेणियाँ पूर्व से पश्चिम को गई हैं। जहाँ पहले झीलें थीं वहाँ हवा ने मिट्टी ला ला कर उपजाऊ मैदान बना दिया है। इन्हीं उपजाऊ भागों में सबसे घनी आबादी है। शीतकाल बहुत ठंडा और ग्रीष्म में गरम रहता है। बसन्त और ग्रीष्म में वर्षा होती है। उपजाऊ लोयस मिट्टी में गेहूँ, ज्वार बाजरा, मकई, शोरगम, कपास, तम्बाकू, अखरोट, मटर, सरसों अंगूर और दूसरे फलों की उपज होती है। इस प्रान्त में बहुत ही बढ़िया कोयला और लोहा पाया जाता है। खेती करना और कोयला खोदना यहाँ का पेशा है। देशी लुहार प्रान्त भर में फैले हुए हैं। नये ढंग के कारखाने नहीं हैं। प्रान्त में सिंचाई की नहरों और रेलवे लाइनों की कमी है। फेन नदी में ४० मील तक कुछ महीनों में नावें चलती हैं। मैदान की गहरी लीकों में बैल गाड़ियाँ चलती हैं। हाल में कई अच्छी सड़कें बन गई हैं।

तैयुआनफू प्रान्त की राजधानी है। और रेल द्वारा पेकिंग-हांगकाओ लाइन से मिला हुआ है। क्वेह्वागिंत दूसरा बड़ा नगर है। प्रान्त के लोग मन्दरिन (चीनी) भाषा बोलते हैं।

पृष्ठ नम्बर २१

सिनक्यांग

सिनक्यांग (५,५००,०० वर्ग मील जन संख्या २५ लाख) एक विशाल रेगिस्तान है जो उत्तर और दक्षिण में ऊँचे ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है। उपजाऊ भाग कहीं कहीं नदियों के किनारे हैं। तरीम यहाँ की प्रधान नदी है। जहाँ सिंचाई हो जाती है वहाँ बढ़िया फसलें होती हैं। हामी का मरुद्यान (ओसिस) बड़ा उपजाऊ है। यहाँ जौ, जई, ज्वार बाजरा, और गेहूँ की खेती होती है। यहाँ के तरबूज़ चीन भर में प्रसिद्ध हैं। पहले वे यहाँ से पेकिंग को भी भेजे जाते थे। यहाँ की खनिज सम्पत्ति का अभी तक ठीक ठीक पता नहीं लग सका है। यहाँ जेड (बहुमूल्य पत्थर) निकाला जाता है। घोड़े, भेड़, बकरी, ऊँट और गधे बहुत पाले जाते हैं। क़ालीन, रेशमी कपड़े, जेड, नमदा, और खाल तैयार करने का काम होता है। इस ओर एक भी रेल नहीं है। प्राचीन ऐतिहासिक कारवाँ मार्ग भी अच्छी हालत में नहीं हैं। काशगर (६०,०००) यारकन्द (५०,०००) खोटा (३०,०००) उरूमशी (३०,०००) और तुरफान प्रधान नगर हैं।

पृष्ठ नम्बर २४

होनान

होनान का क्षेत्रफल ६८,००० वर्ग मील और जनसंख्या ३ करोड़ ९ लाख है। प्रान्त की पश्चिमी सीमा के पास पहाड़ियाँ हैं। शेष भागों में मैदान हैं। यहाँ ज़मीन उपजाऊ है। लेकिन ह्वांगहो नदी की बाढ़ का भय लगा रहता है। गरमी की ऋतु गरम होती है। इसी ऋतु में पानी बरसता है। सरदी की ऋतु खुश्क होती है तभी खूब जाड़ा पड़ता है। गेहूँ, सोरगम, सोयाबीन, ज्वार, बाजरा, तिल, मकई, धान कपास और मटर यहाँ की प्रधान उपज है। कपास की खेती बहुत बढ़ रही है। कोयला और लोहा अधिक है। खेती के बाद कोयला खोदना, ईंट पाथना और सूती कपड़ा बुनना ही यहाँ का कारबार है।

ह्वांग हो, ह्वै, और वी नदियों में केवल ह्वांग हो नदी के कुछ भागों में नावें चल सकती हैं। पेकिंग हांकाओ रेलवे उत्तर से दक्षिण को और लंग-है रेलवे पूर्व से पश्चिम को जाती है। कैफेंग प्रधान नगर (१ लाख से ऊपर) और राजधानी है। चेंगचाओ टीटो पोर्ट और कारबारी नगर है। यहाँ की भाषा मन्दरिन (चीनी) है।

पृष्ठ नम्बर २२

मंगोलिया

मंगोलिया (१३ लाख ७० हज़ार वर्ग मील जन संख्या २५ लाख) एक विशाल तसले के आकार का तीन चार हज़ार फुट ऊँचा पठार है। यह ऊँचे पहाड़ों और लहरदार स्टेपों से घिरा हुआ है। बीच में ढाई लाख वर्ग मील का गोबी रेगिस्तान है। यहाँ अक्सर धूलभरी आँधियाँ चलती हैं। हवा खुश्क है। शीत काल में अत्यन्त अधिक जाड़ा पड़ता है। उत्तरी भाग को बाहरी मंगोलिया और दक्षिणी भाग को भीतरी मंगोलिया कहते हैं। देश के कुछ भागों में चरागाह हैं जहाँ भेड़ें और गाय बैल पाले जाते हैं। चारे की तलाश में लोग मारे मारे फिरते हैं। बहुत कम भागों में खेती होती है। पानी दस इंच से कम (८-१०) बरसता है। घास गेहूँ और ज्वार बाजरा की खेती होती है। मंगोलिया में सोना बहुत पुराने समय से निकलता रहा है। कोयला, लोहा, ताँबा, चाँदी, सीसा, और जस्ता मिलने की भी आशा की जाती है। ढोर और भेड़ चराने का प्रधान पेशा होने से ऊन और चमड़ा यहाँ की प्रधान उपज हैं। लिकोरिस और दवाइयाँ भी बनती हैं।

इस प्रदेश में एक भी रेलवे नहीं है। जलमार्गों का भी अभाव है। उर्गा (राजधानी) से एक रेलवे लाइन पेकिंग-कालगन लाइन तक खुलने वाली है। दस बारह विदेशी और चीनी मोटर कम्पनियाँ उर्गा और कालगन के बीच में मोटर चलाया करती हैं। सड़क अच्छी नहीं है। रास्ते में चार दिन लगते हैं। उर्गा से साइबेरिया को ऊंटों और बैलगाड़ियों का कारवाँ जाया करता है। उर्गा (३८,०००) राजधानी है। दूसरा नगर क्याख्ता है। प्रधान मंगोलिया में मंगोल लोग रहते हैं और मंगोली भाषा बोलते हैं। पश्चिम की ओर तुर्की फिरके और दक्षिण की ओर चीनी लोग रहते हैं।

पृष्ठ नम्बर २५

तिब्बत

तिब्बत (४६५,००० वर्ग मील, जन संख्या ६० लाख) का बहुत बड़ा भाग पथरीला रेगिस्तान है। दक्षिण और पश्चिम की घाटियाँ उपजाऊ हैं। इन में घनी वनस्पति है। चुम्बी नदी की घाटी सब से अधिक उपजाऊ है। तिब्बत का पठार दुनियाँ भर में सब से ऊँचा देश है। उत्तर और दक्षिण की ओर यह और भी अधिक ऊँचे पहाड़ों (उत्तर में क्विनलुन और दक्षिण में हिमालय) से घिरा हुआ है। इसी से यहाँ पहुँचना दुर्गम है। उपजाऊ घाटियों में फल तरकारी, मकई, और जौ उगता है। चरागाह अधिक हैं। याक, गधे, भेड़ बकरी और घोड़े बहुत पाले जाते हैं। तिब्बत में खनिज पदार्थ बहुत हैं। सोना कई भागों में मिलता है। याक का चमड़ा, भेड़ की खाल मुश्क, सोने का बुरादा, ऊन, कम्बल, कालीन और औषधि यहाँ की प्रधान सम्पत्ति है। तिब्बत में सड़कें बहुत कम हैं। जो हैं वे बड़ी खराब हैं। नदियों को रस्से के पुल से पार करना पड़ता है। कभी कभी याक की खाल की मशक बनाकर और उसका सहारा लेकर नदी को पार किया जाता है। सरकारी हरकारे दिन-रात बारी बारी से घोड़ों पर सवार होकर चलते हैं और एक महीने में पेकिंग से लासा पहुँच जाते हैं। लासा (४०,०००) प्रधान नगर और राजधानी है। यहाँ आधे से अधिक लामा हैं। पर्व के अवसर पर यहाँ यात्रियों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। यातुंग ट्रीटी पोर्ट है। यहाँ कुछ ही सौ लोग रहते हैं। दूसरे नगर और भी छोटे हैं। तिब्बती लोग बड़े हंसमुख मजबूत और संगीत प्रेमी होते हैं। उनकी भाषा तिब्बती है।

पृष्ठ नम्बर २६

---

३८ वें पेज का शेषांश

नगरों में मोटर सर्विस है। सरदी की ऋतु में मोटर सब कहीं जा सकते हैं। हार्बिन में १ लाख विदेशी गोरे हैं। यह एशिया का एक ऐसा नगर है जिसमें गोरों की संख्या सब से अधिक है। इस नगर के गोरों में अधिकतर निवासी रूसी हैं। यहीं २ लाख चीनी रहते हैं। मुकडन राजधानी में २ लाख चीनी रहते हैं। दूसरे बड़े नगर डेरियन (१,८६,०००) और किरीन (१ लाख) हैं। चांगचुन, ऐगुन और न्यूच्वांग भी प्रसिद्ध शहर हैं। यहाँ के ५ फीसदी निवासी चीनी हैं। इसी से उत्तरी मन्दरिन (चीनी भाषा) बोली जाती है। लेकिन शासन की बागडोर और बड़े बड़े कारबार जापानियों के हाथ में हैं इसलिये जापानी भाषा का प्रचार भी बढ़ रहा है।

पृष्ठ नम्बर १७, २०, २३

मंचूरिया

मंचूरिया (३,६५००० वर्ग मील जन संख्या २ करोड़ २० लाख) में शेंगकिंग (फेंगतिन), किरीन और हेलुंग क्यांग तीन प्रान्त हैं। उत्तरी भाग अधिक बड़ा है। यहाँ वन अधिक है। इसका ढाल अमूर नदी की ओर है। दक्षिणी भाग अधिक उपजाऊ और अधिक घना बसा है। इसका ढाल ल्याओतुंग की खाड़ी की ओर है। उत्तर में सुंगारी नदी के मैदान और दक्षिण में ल्याओ के मैदान में उत्तम फसलें होती हैं। कई भाग इस समय भी बिना जुते पड़े हैं। उपजाऊ पठार में दो दो गज ऊँची घास होती है। यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यप्रद है। सर्दी की ऋतु बहुत लम्बी और बड़ी ठंडी होती है।

मंचूरिया के कुछ भागों में खेती की ज़मीन दुनियाँ भर में सर्वोत्तम है। सोयाबीन, गेहूँ, ज्वार बाजरा, सोरगम और मकई की फसलें बहुत अच्छी होती हैं। रेशम के कीड़ों को सिन्दूर के पत्ते खिलाये जाते हैं। रेशम काफी तैयार होता है। नील, तिलहन और फल खूब होते हैं। जानवर भी बहुत पाले जाते हैं।

दक्षिणी मंचूरिया कोयले का एक विशाल क्षेत्र है। लोहा और सोना भी निकलता है। उत्तरी मंचूरिया में सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा और सोडा मिलता है। सोना अमूर नदी की सहायक नदियों के पड़ोस में उत्तरी हेलुंग क्यांग में मिलता है। खेती के अतिरिक्त सोयाबीन से तरह तरह की खाने की चीजें बनाने, आटा पीसने, लकड़ी काटने और ढोर पालने में मंचूरिया के लोग लगे हुए हैं। रेशम, तम्बाकू, नमदा, खाल और लोहे कोयले के कारबार में बहुत सा धन लगा हुआ है। साउथ मंचूरियन रेलवे से दक्षिणी भाग में और चाइनीज़ ईस्टर्न रेलवे से उत्तरी भाग में बहुत सा कारबार बढ़ गया है।

अमूर नदी में मुहाने के पास बसे हुए निकोलेवस्क नगर से ब्लागोवेस्चेन्स्क नगर तक बड़े बड़े स्टीमर चलते हैं। छोटे छोटे स्टीमर मुहाने से १५०० मील से कुछ अधिक दूर बसे हुए स्ट्रेटेन्स्क जाते हैं। मुहाने के पास रेतीले टीले की रुकावट होने के कारण पहले समुद्री जहाजों को अमूर नदी में ऊपर पहुँचने में बाधा पड़ती थी। लेकिन मिट्टी निकल जाने से आजकल समुद्री जहाज़ खाबरोवस्क तक जा सकेंगे।

सुंगारी नदी में किरीन नगर तक, नोनी में शिशिहर तक, ल्याओ में तुङ्ग क्यांग्ज़ी तक और यालू नदी के समूचे मार्ग में नावें चल सकती हैं। मुकडन शहर दक्षिण में पेकिंग और टियन्टसिन से उत्तर में हार्बिन और शिशिहर से, दक्षिण-पूर्व में पोर्टआर्थर और डेरियन से और पूर्व में अन्तुंग नगर से रेल द्वारा जुड़ा हुआ है। मंचूरिया होकर पेकिंग से याकोहामा और मास्को को रेलमार्ग गया है। चाइनीज़ ईस्टर्न रेलवे द्वारा हार्बिन चांगचुन से मिला हुआ है जो साउथ मंचूरियन रेलवे का अन्तिम उत्तरी स्टेशन है। पश्चिम की ओर मंचौली से (जो चीता रेलवे का अन्तिम स्टेशन है) ट्रान्ससाइबेरियन रेलवे को और पूर्व में उसूरी रेलवे के अन्तिम स्टेशन निकोल्स्क को रेल गई है। यहाँ से रेलवे प्रशान्त महासागर के किनारे ब्लाडीवोस्टक को चली गई है। चाइनीज़ ईस्टर्न रेलवे की इक्सप्रेस गाड़ियां दुनियाँ भर में सर्वोत्तम गिनी जाती हैं। हार्बिन और उत्तरी मंचूरिया के दूसरे

शेष पृष्ठ ३७ पर देखिये

चीन देश के समय समय पर बदलने वाले

राजनैतिक मानचित्र

चीनी साम्राज्य की चरम सीमा और व्यापार मार्ग।
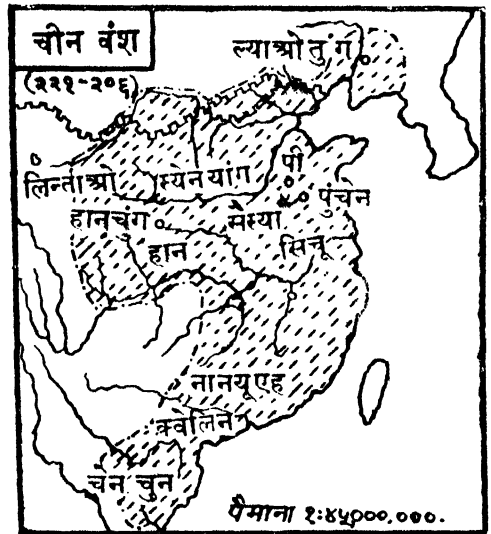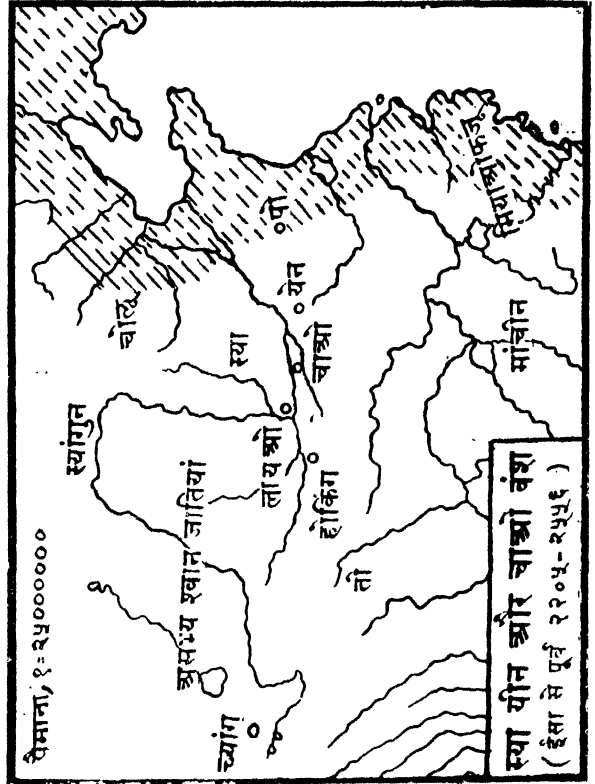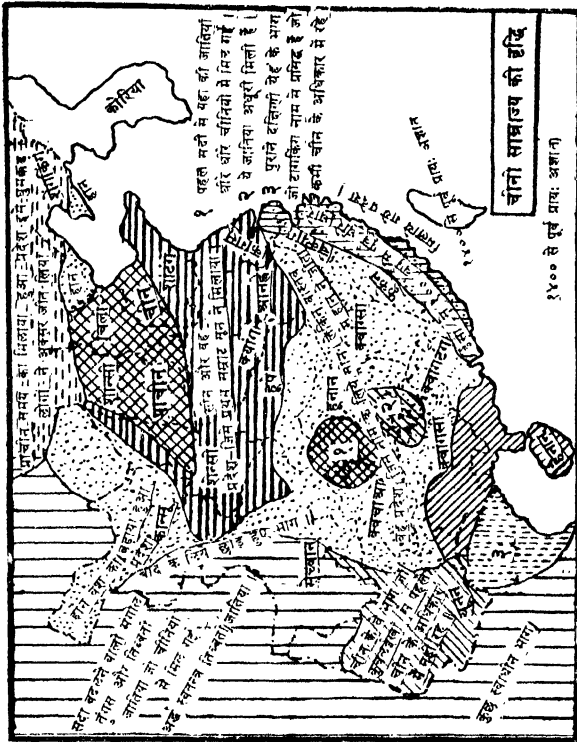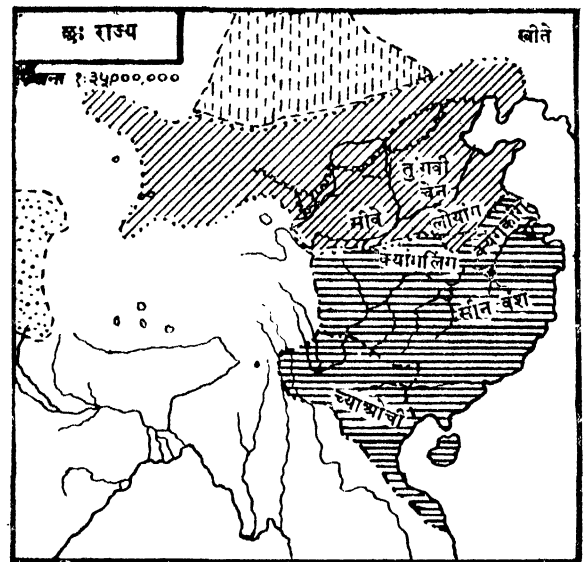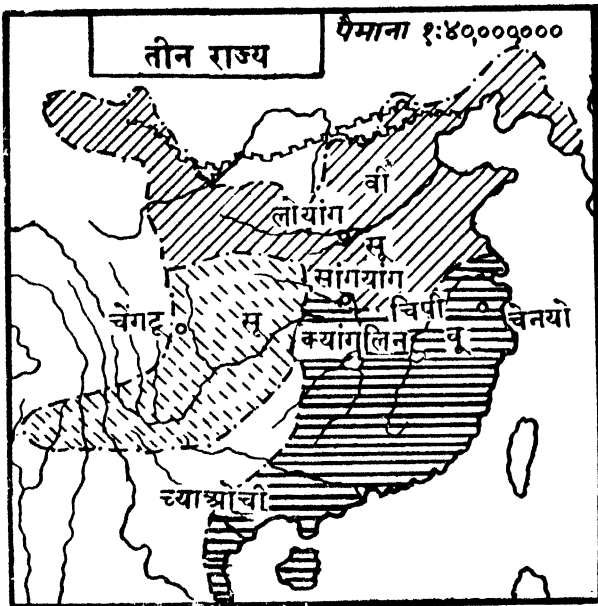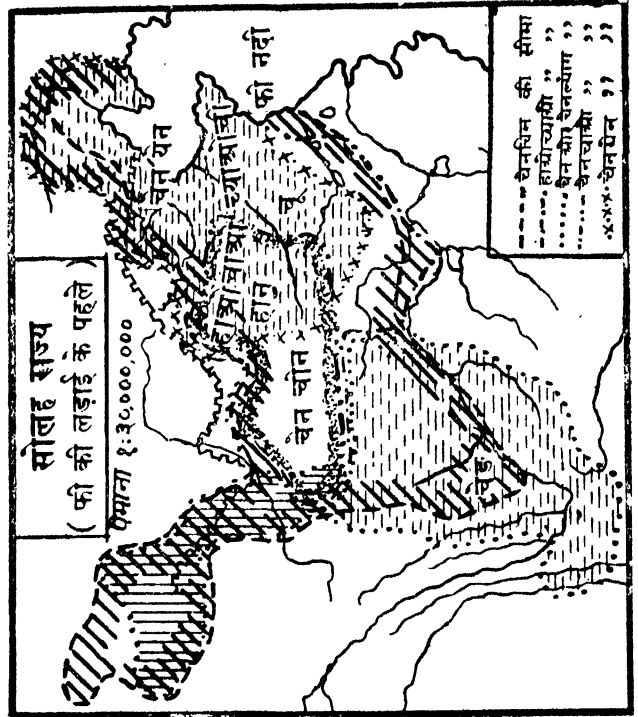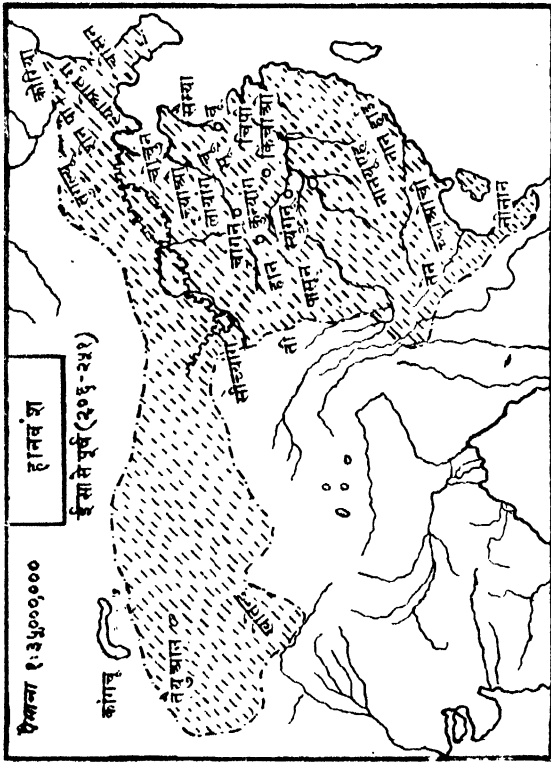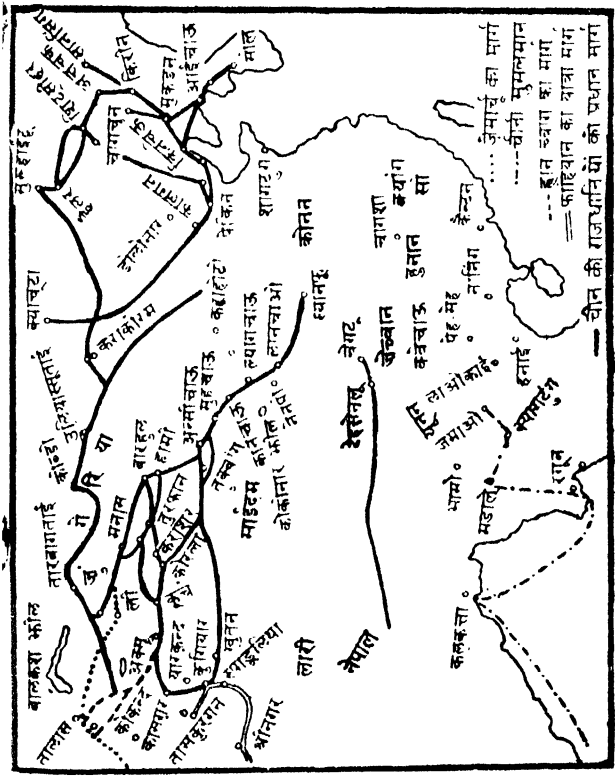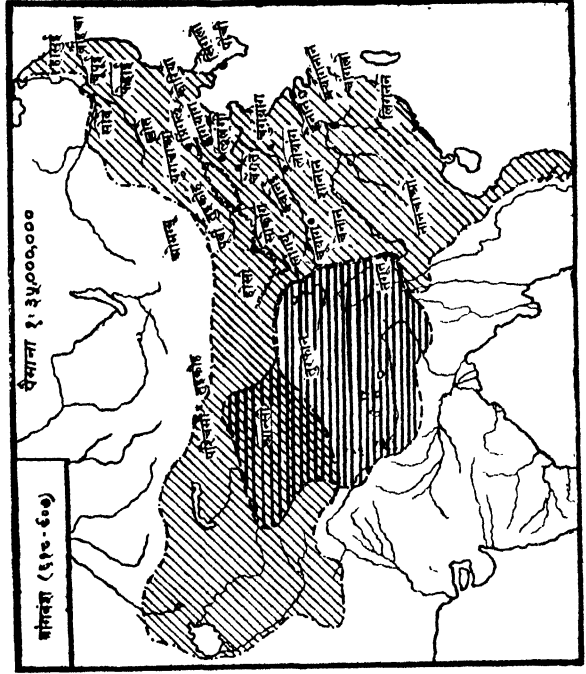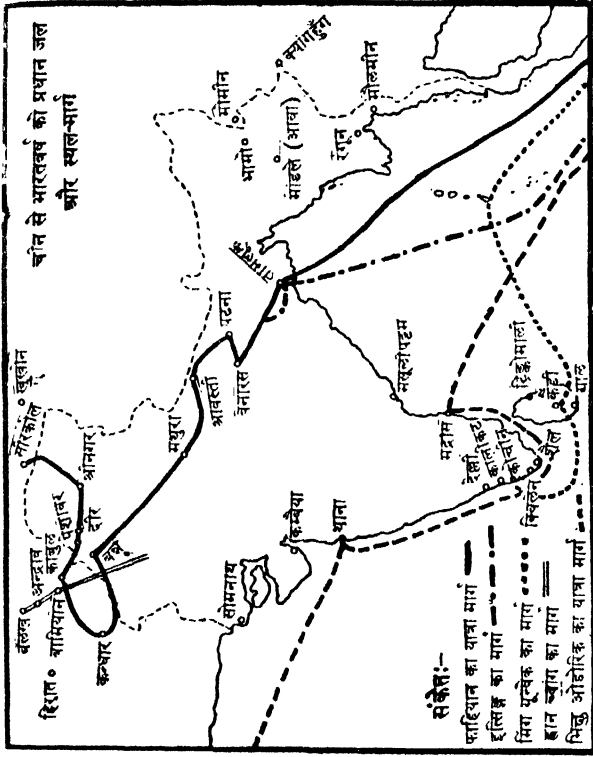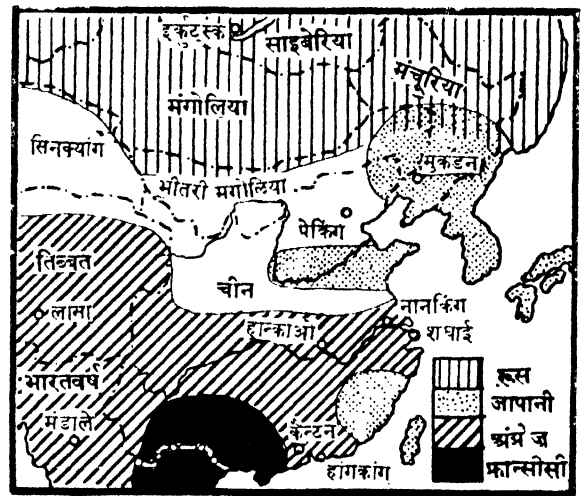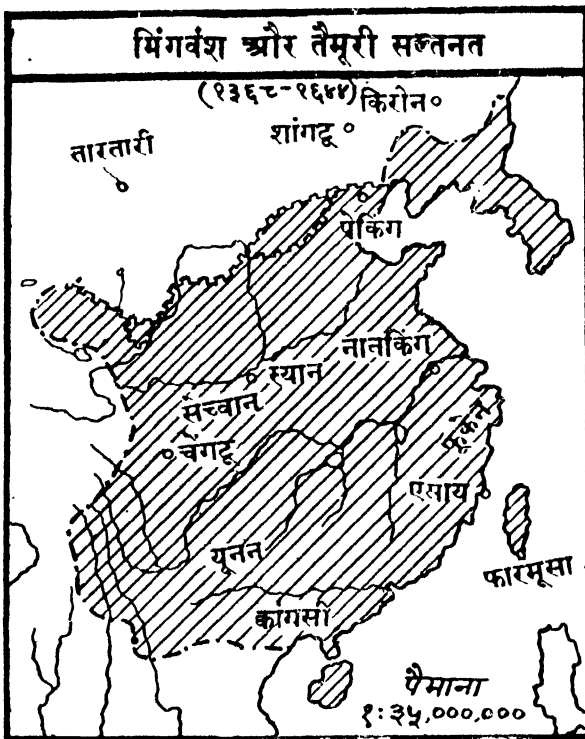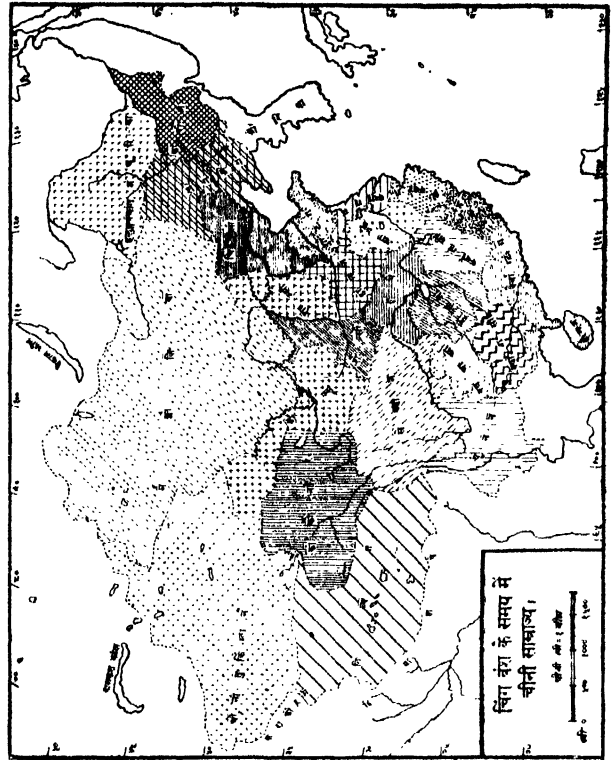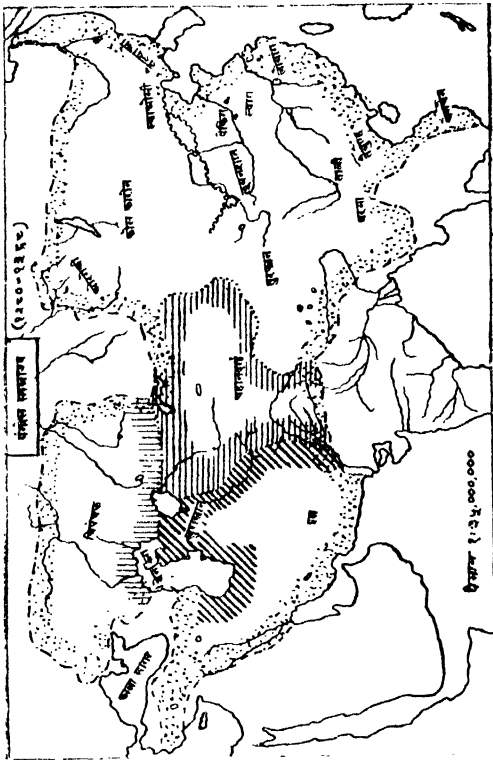
चीन में विदेशी प्रभाव के क्षेत्र

चीनी इतिहास की प्रमुख घटनायें

ईसा से पूर्व २३५६ याओ राजा गद्दी पर बैठा
२२०५ स्या वंश की स्थापना
१७६६ शांग वंश ,, ,,
११२२ चाओवंश ,, ,,
६०५ लाओज़ू का जन्म
५५१ कनफ्यूशस का जन्म
४७९ कन्फ्यूशस की मृत्यु
३७२ मेन्शस का जन्म
२४९ चाओवंश का अन्त
२१२ कनफ्यूशस सम्बन्धी साहित्य जलाया गया
२०४ बड़ी दीवार बनकर समाप्त हुई।
२०२ हानवंश की स्थापना
ईस्वी ६५ बौद्ध धर्म का आगमन
२२१ तीन राज्य। चीन की प्रथम गुप्त समिति
५८९—सुईवंश
६१८ तांगवंश की स्थापना और इस्लाम धर्म का प्रवेश
६३५ नेस्टोरियन ईसाइयों का आगमन
९०७—पांत्ववंश की स्थापना
९६० सुग वंश ,, ,,
१२७५ मार्को पोलो चीनी राजधानी में पहुँचा
१२८० मंगोल वंश की स्थापना
१३६८ मिंग वंश की स्थापना
१५१६ पुर्तगाली लोग चीन में आये।
१५५७ पुर्तगाली लोग मकाओ में बस गये।
१६०१ रिक्सी पेकिंग में पहुँचा
१६३७ प्रथम ब्रिटिश जहांज़ केन्टन में आ लगा।
१६४४ रूसी लोग पहली बार अमूर की घाटी में आये।
१६८९ रूस और चीन के बीच में पहली सन्धि हुई।
१७२० चीनी कोहांग या एकाधिकार (monopoly) का केन्टन में संगठन।
१७२९ अफीम न पीने की सरकारी आज्ञा
१७३३ चीनी राजदूत सेंटपीटर्स बर्ग (रूस की राजधानी) को भेजा गया।
१७८४ प्रथम अमरीकन जहाज़ केन्टन में आ लगा
१७९३ ब्रिटिश राज दूत पेकिंग में आया।
१७९६ अफीम निषेध की घोषणा।
१८०० अफीम लाने का निषेध
१८०७ प्रथम ईसाई प्राटस्टेन्ट मिशन केन्टन में आया।
१८१६ एम्हर्स्ट (राजदूत) पेकिंग में आया।
१८३४ ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के निरंकुश व्यापार (मानोपली) का अन्त
१८३९ चीनी कमिश्नर ली ने चोरी से लाई हुई अफीम को पकड़ कर जलवा दिया।
१८४० ब्रिटिश ने केन्टन को घेर लिया
१८४२ चीन और ब्रिटेन की (नानकिंग की) सन्धि
१८४३ ब्रिटिश व्यापारिक सन्धि। शंघाई का द्वार विदेशी व्यापार के लिये खोल दिया गया
१८४४ अमरीका और चीन की सन्धि
१८४९ पुर्तगाली लोगों ने चीनी चुंगी विभाग को मकाओ शहर से भगा दिया
१८५१ तैपिंग विद्रोह का आरम्भ
१८५ तैपिंग लोगों ने नानकिंग पर अधिकार कर लिया।
१८५४ शंघाई के चुंगीघर में विदेशी प्रबन्ध
१८५६ लोची की घटना
१८५७ अँग्रेजों और फ्राँसीसियों ने केन्टन पर अधिकार कर लिया।
१८५८ टियन्टसिन की सन्धियों पर ब्रिटिश अमरीकन, रूसी और फ्रांसीसियों ने हस्ताक्षर किये

१८५९ ताकू में अँग्रेज़ों और फ्रांसीसियों की हार।

१८६० अँग्रेज़ और फ्रांसीसियों ने पेकिंग ले लिया।

१८६४ तैपिंग विद्रोहियों को हरा कर शाही सेना ने नानकिंग फिर ले लिया।

१८६६ इलाई में मुसलमानी विद्रोह।

१८६७ फ्रांसीसियों ने कोचीन चीन के तीन प्रान्त मिला लिये। अमरीकन लड़ाकू जहाज़ कोरिया में आया।

१८७१ रूसी लोगों ने कुल्जा ले लिया।

१८७५ क्वांगसू सम्राट घोषित किया गया।

१८७६ जापानी बेड़ा कोरिया पर चढ़ आया। शंघाई-वूसुंग रेलवे का आरम्भ।

१८७७ चीनियों ने इस रेलवे को मोल लेकर नष्ट कर दिया। प्रथम चीनी राजदूत लन्दन पहुँचा।

१८७८ मुसलमानी विद्रोह दबा दिया गया। प्रथम चीनी राजदूत अमरीका पहुँचा। कैपिंग की कोयले की खानों से कोयला निकलने लगा। चुंगी विभाग ने अपना पोस्ट आफिस खोल लिया।

१८८० अमरीका और चीन की व्यापारिक सन्धि। तार घरों की मंजूरी।

१८८१-शंघाई-टियन्टसिन तार की लाइन तैयार हो गई।
रूसियों ने कुल्जा और इलाई प्रदेश लौटा दिया।

१८८२ अमरीका और कोरिया की सन्धि।

१८८३ अनाम पर फ्रांसीसियों ने अपना संरक्षण घोषित कर दिया।

१८८४ अनाम के लिये चीनी-फ्रांसीसी लड़ाई।
सिउल (कोरिया) में चीनी जापानी लड़ाई।

१८८५—टियन्टसिन में चीन-जापान की सन्धि और फ्रांस से सन्धि।

१८८६ बरमा और तिब्बत के सम्बन्ध में ब्रिटेन और चीन की सन्धि।

१८८७ सीमा प्रान्तीय व्यापार सम्बन्धी फ्रांस और चीन की सन्धि।

१८८७ पुर्चगीज़ ने चीन से सन्धि कर के मकाओ शहर ले लिया।

१८८८ लेंगशान से टियन्टसिन को रेल खुली।

१८९० सिकम और तिब्बत के सम्बन्ध में ब्रिटेन और चीन की सन्धि।

१८९१ ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध यांगज़ी घाटी में दंगे।

१८९४ चीनियों को दस वर्ष तक अमरीका न भेजने के सम्बन्ध के अमरीका और चीन की सन्धि।
कोरिया में तोंगहाक का विद्रोह।
यालू नदी के किनारे चीन-जापान युद्ध।

१८९५—जापान से शिमोनोसेकी की सन्धि। रूस, फ्रांस और जर्मनी ने ल्याओटंग प्रायद्वीप लौटाने के लिये जापान को विवश किया।

१८९६ चाइनीज़ ईस्टर्न रेलवे के सम्बन्ध में रूस और चीन की सन्धि।

१८९७ शांगटंग में दो जर्मन मिशनरियों की हत्या। जर्मनों ने सिंगटाओ छीन लिया।

१८९८—जर्मनी ने ९९ वर्ष के लिये क्याओचाओ का पट्टा लिखा लिया। रूस ने २५ वर्ष के पट्टे पर क्वांगटंग प्रायद्वीप को ले लिया।
फ्रांस ने क्वांगचाओवान छीन लिया। ब्रिटेन ने वीहाइवी को पट्टे पर ले लिया।
महारानी डोवोजर ने सम्राट को क़ैद कर शासन की बागडोर अपने हाथ में ली।

१८९९ यांगज़ी घाटी में ब्रिटिश प्रभाव और मंचूरिया में रूसी प्रभाव स्था-

पित करने के लिये रूस और ब्रिटेन की सन्धि।

बाक्सर विद्रोह

१९०० विदेशी राजदूतों (शक्तियों) की फौज पेकिंग को भेजी गई। विदेशी फौज ने ताकू के क़िले ले लिये।

१९०१ पेकिंग की सन्धि।

१९०२ एंग्लो-जापानी सन्धि।

१९०३ ब्रिटिश फौज ने तिब्बत पर चढ़ाई की।

१९०४ रूस-जापान युद्ध।

१९०५ पोर्ट्समथ में रूस और जापान की सन्धि।
ब्रिटेन और जापान की मित्रता सम्बन्धी सन्धि।
चीन ने मंचूरिया के रूसी अधिकार जापान को सौंप दिये।

१९०६ तिब्बत के सम्बन्ध में ब्रिटेन और चीन की नई सन्धि।
अफीम का प्रयोग न करने के सम्बन्ध में चीनी सम्राज्ञी की घोषणा।

१९०७ तिब्बत के सम्बन्ध में एंग्लो-रूसी सन्धि।

१९०८ चीन के सम्राट और साम्राज्ञी की मृत्यु।

१९०९ शासन सुधार के बाद प्रान्तीय सभाओं की प्रथम बैठक।

१९१० क्षणिक राष्ट्रीय सभा की बैठक।

१९११ वूचांग में क्रान्ति का आरम्भ। बाहरी मंगोलिया ने स्वाधीनता घोषित कर दी।

१९१२ मांचू राजवंश का सिंहासन त्याग। सनयात सेन दक्षिणी चीन के प्रथम राष्ट्रपति हुए।

१९१३—युआन शिकाई राष्ट्रपति हुये। अमरीका ने चीन के प्रजातन्त्र राज्य को स्वीकार कर लिया।

१९१४—जापान ने जर्मनी से क्याओ चाओ मांगा। ब्रिटेन और जापान ने सिंग-टाओ ले लिया।

१९१५ जापान ने अपनी २१ मांगें चीन के सामने पेश कीं। चीन ने इस सम्बन्ध में सन्धि कर ली।
युआन ने सम्राट बनने का प्रयत्न किया।

१९१६ दक्षिणी प्रान्तों में विद्रोह। युआन की मृत्यु

१९१७ अमरीका ने जर्मनी से सम्बन्ध तोड़ने के लिये चीन को आमन्त्रित किया। चीन ने जर्मनी से लड़ाई छेड़ दी। शांगटंग के सम्बन्ध में जापान, फ्रांस, रूस और ब्रिटेन की गुप्त सन्धि।

१९१८ शांगटंग के सम्बन्ध में चीन जापान की गुप्त सन्धि।

१९१९ बड़ी लड़ाई के बाद चीनी प्रतिनिधि सन्धि परिषद के लिये वर्सेल्स भेजे गये।

१९२२ शांटंग के सम्बन्ध में चीन जापान की सन्धि। वाशिंगटन में चीन की स्वाधीनता और साम्राज्य को अविछिन्न रखने के लिये नौ शक्तियों की सन्धि।

१९२३ केन्टन बन्दरगाह में अन्तर्राष्ट्रीय फौजी बेड़े का प्रदर्शन

१९२४ ह्वांगपोआ मिलीटरी एकेडेमी की स्थापना।

१९२५—सनयात सेन की मृत्यु। चीनी राष्ट्रीयता और ब्रिटिश साम्यवाद की मुठभेड़। हांगकांग का बहिष्कार।

१९२६ वहिष्कार उठा लिया गया।

१९२७ चीन की राष्ट्रीय सरकार ने हैंकाओ के ब्रिटिश कन्सेशन पर अधिकार कर लिया। ब्रिटिश फौज का शंघाई में आगमन। केन्टन में साम्यवादी विद्रोह।

१९२८—विद्रोही सेना और जापानी सेना में मुठभेड़। राष्ट्रीय सेना का पेकिंग में प्रवेश। नानकिंग राजधानी बना

चीन और बेल्जियम की मित्रता सम्बन्धी सन्धि।

१९२९ मंचूरिया में नानकिंग का शासन प्रबन्ध।

१९३०-नानकिंग सरकार ने चीन से इक्स्ट्रा-टेरिटोरियल (विदेशी) न्याय विभाग उठाने की घोषणा की।

१९३२ मुकडन में प्रान्तीय सरकारों का सम्मेलन।

१९३३ चीन-जापान युद्ध। मंचूकुओ राज्य (जापानी संरक्षण में) की स्थापना। जेहोल प्रान्त में जापानी आक्रमण।

१९३५ जापान ने उत्तरी चीन में होपे, शांटंग, शांसी और चाहार को मिलाकर एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया।

१९३७ जुलाई में जापान ने फिर चीन पर आक्रमण किया। उत्तरी चीन और नानकिंग पर जापानी फौज का अधिकार। चुंगकिंग चीन राष्ट्र की क्षणिक राजधानी बना।

चीन और हिन्दुस्तान का सम्पर्क

६५ ईस्वी में चीन के राजा मिंग ती ने बौद्ध धर्म का सन्देश लाने के लिये भारतवर्ष को राजदूत भेजे। यह राजदूत अपने साथ कश्यप मातंग और धवरकेह नाम के दो भारतीय विद्वानों और कई ग्रन्थों को ले आये। कश्यप मातंग ने ४२ खंडों के एक छोटे से सूत्र ग्रन्थ का चीनी भाषा में अनुवाद किया, इस से चीन देश में बौद्ध धर्म का प्रचार बहुत तेजी से बढ़ने लगा, जिस सफेद घोड़े पर लदकर भारतवर्ष से धर्म ग्रन्थ लाये गये थे। उसी के नाम से चीन में पहला मन्दिर बना। दोनों भारतीय पुजारी इस मन्दिर में रह कर मरने के समय तक ग्रन्थों का अनुवाद और धर्म प्रचार का काम करते रहे। इस समय दक्षिणी (लंका) बौद्धों के ग्रन्थ पाली भाषा में होने लगे। उत्तरी बौद्धों के ग्रन्थ संस्कृत भाषा में थे। कश्यप मातंग उत्तरी भारत के सम्प्रदाय के थे। इसलिये इनके साथ अधिकतर ग्रन्थ संस्कृत भाषा के थे। ३३५ ईस्वी में राजा चाओ की ओर से घोषणा हुई कि जो चाहे वह श्रमन (बौद्ध) बन सकता है। तारतारी लोग पहले ही से बौद्ध बन चुके थे। इस घोषणा से प्रधान चीन में भी बौद्धों की संख्या बढ़ने लगी। उत्तरी चीन में लगभग ९० फीसदी लोग बौद्ध हो गये। ४०५ ई० में भारत वर्ष का प्रसिद्ध भिक्षु कुमारजीव चीन में पहुँचा। यह नानलू के कौतुजी राज्य में ठहरे हुए थे। इनको लाने के लिये चीन के राजा ने नानलू पर चढ़ाई की। कुमारजीव ने कई बौद्ध ग्रन्थों का अनुवाद और सम्पादन किया। एक शास्त्र भी चीनी भाषा में लिखा। बुद्धिधर्म जलमार्ग से केन्टन पहुँचे। इनके बारे में गाथा है कि एक दीवार के सामने मुँह करके वे ९ वर्ष तक बैठे रहे। ६ ठीं सदी के बाद बहुत से भारतीय भिक्षु चीन में प्रचार करने के लिये आये। भारतीय मिशनरियों की चीन में बाढ़ ही आने लगी। फिर कई चीनी भी भारतवर्ष में तीर्थ यात्रा करने के लिये गये।

चीनी इतिहास के कुछ चित्र

चीन के प्रसिद्ध सम्राट ह्वांगती का योग्य सेनापति सांगची। सांगची ने छ: प्रकार की लिपि का आविष्कार किया।

सम्राट शुन का त्याग भरत के समान है। जब यात्रो सम्राट की मृत्यु हो गई तो शुन ने राजगद्दी पर बैठने से इनकार कर दिया। २ वर्ष तक उन्होंने शोक मनाया। अन्त में प्रजा के बहुत कुछ कहने पर सिंहासन ग्रहण किया। बाढ़ को रोकने के लिये उन्होंने इंजीनियर नियुक्त किये। जो विफल हुआ उसे फाँसी दी। लेकिन यू ने नदियों की तली को गहरा किया और बाँध बनाये। ८ वर्ष के निरन्तर परिश्रम के बाद यू (इंजीनियर) को सफलता मिली। शुन ने प्रसन्न होकर यू को अपना उत्तराधिकारी

सम्राट शुन।

बनाया। शुन ने ४७ वर्ष तक राज्य किया। यात्रो और शुन का शासनकाल चीनी इतिहास में स्वर्ण युग समझा जाता है।

जब सम्राट शुन २३ वर्ष राज्य कर चुका तो उसने यू की योग्यता से प्रसन्न होकर उसे अपना समान अधिकारी बना लिया। यू ने बाढ़ से तो देश को बचा ही लिया था। वह प्रजा से मिलने का बड़ा इच्छुक था।

सम्राट यू (ईसा से पूर्व २२०५ से २१९७ तक)

उसने राज द्वार पर एक ढोल और एक घण्टा रखवा लिया था। घन्टा बजाते ही आवश्यक काम से मिलने वालों को भीतर जाने की आज्ञा मिल जाती। इससे यू को अक्सर दोपहर का भोजन देरी से करना पड़ता था। सम्राट यू ने स्या राजवंश की नींव डाली।

तांग वंश का अमर प्रधान मन्त्री यिन।

जब सम्राट तांग का लड़का सम्राट होने पर बिगड़ने लगा तो यिन ने उसे गद्दी से उतार दिया। २ वर्ष में जब वह सुधर कर फिर आया तब यिन ने उसे राजा बना दिया। ह्वांग हो की बाढ़ से बचने के लिये राजधानी यिन स्थान में बनाई गई। इससे नाम यिन राजवंश पड़ गया।
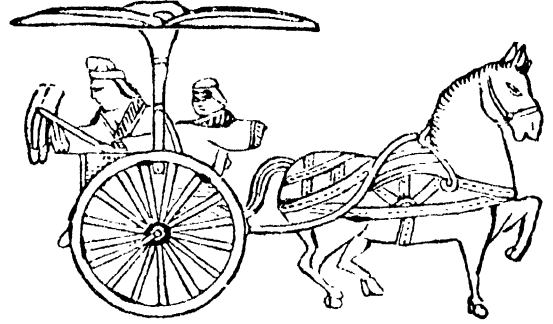
चीनी रथ।

रथ प्राचीन चीनी सेना का प्रधान अङ्ग था रथ लकड़ी और चमड़े के बनते थे। ईसा पूर्व १७२७ से चीनी रथों का उल्लेख मिलता है।

महात्मा कन्फ्यूशस

उत्तर की असभ्य जातियों को बाहर रखने के लिये सम्राट ने १५०० मील लम्बी बड़ी दीवार

चीन राजवंश के विख्यात सम्राट चिह्वांगती का राजदरबार।

बनवाई। ईसा से पूर्व २०६ में चीन वंश का अन्त हो गया। चीन वंश के बाद हानवंश के राजा हुए।

हान राजवंश के समय का पीतल का दर्पण।

ता य्वेह ने अपना अलग राज्य स्थापित करने की कोशिश की। ईसा से १२७ वर्ष पूर्व चीनियों ने आर्डोस जीत कर शुओफांग (उत्तरी प्रदेश)

ता य्वेह ती के सिक्के।

की नींव डाली। इस समय सिन्ध (हिन्दुस्तान) से कपड़ा आदि कई चीजें यहाँ आती थीं। सिक्के पर भी हिन्दुस्तानी छाप है।
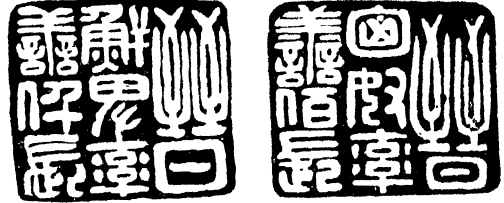
स्युङ्गनू और सेन पे की मुहरें।

जब चीन छोटे छोटे राज्यों में बँटने लगा तब उत्तर में स्युङ्गनू वंश उन्नति के शिखर पर पहुँच रहा था।

तांग ताई सुङ्ग।

उसे रोकने के लिये भेजे। इन में डेढ़ लाख से ऊपर खेत रहे। शेष तितर बितर हो गये। चिंगेज़ का साम्राज्य योरुप से लेकर प्रशान्त महासागर तक फैल गया।
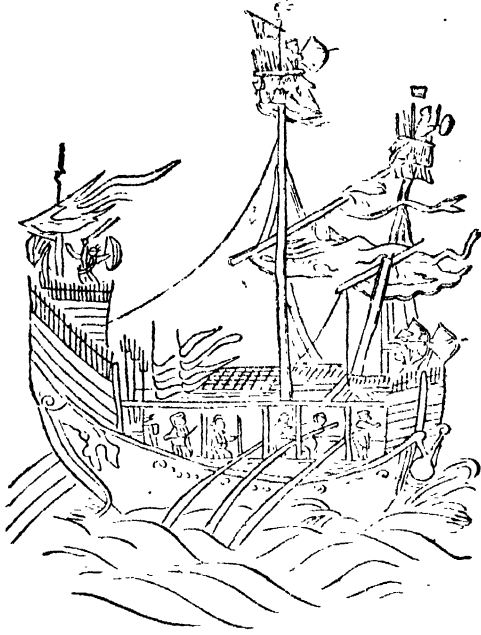
सुंग वंश के समय का लड़ाका जहाज।

यांग्ज़ी की लड़ाई में चीनी लोग इन जहाज़ों की सहायता से अपने शत्रुओं को दूर रखते थे।
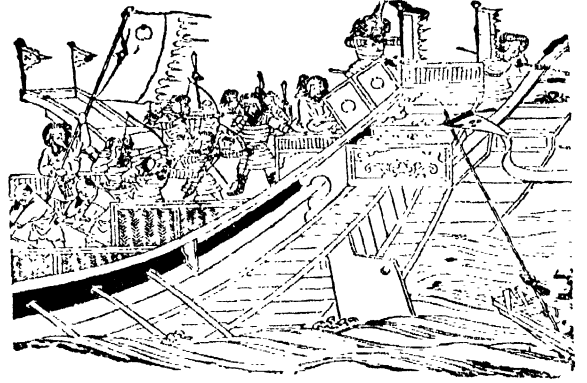
मङ्गोलों का जहाज़ी बेड़ा

मंगोलों की फौजी ताकत इतनी बढ़ी कि उनका एक जहाज़ी बेड़ा चीन तट के उस पार जापान पर हमला करने गया।

दुनिया को दहलाने वाला चिंगेज।

चीन को जीतकर मंगोल कराकोरम से पश्चिमी एशिया की ओर बढ़ा। खलीफा मुहम्मद ने ४ लाख सिपाही

सम्राट कुबलई।

सम्राट कुबलई ने अपने विशाल साम्राज्य की राजधानी कराकोरम से बदल कर पेकिंग में बनाई।

युआन वंश के समय की बारूद ढोने की विशाल

बैल गाड़ी। इसे ढोने के लिये कई जोड़े बैल जोते जाते थे।

युआन वंश के समय का चीनी दर्पण।

इस दर्पण पर संस्कृत का लेख खुदा हुआ है। इस से सिद्ध होता है कि चीन देश में संस्कृत का कितना प्रचार हो गया था।

तैमूर का मक़बरा।

चिंगेज़ के मरने के बाद उसके सम्बन्धी आपस में लड़ने लगे। लेकिन तैमूर लंग ने उन सब को मिला लिया। हिन्दुस्तान से सफल होकर लौटने पर उसने चीन पर चढ़ाई करने की सोची। लेकिन १४०५ में वह ओतरा शहर में मर गया।

मिंग राजा बड़े उन्नत थे। जिस तरह आज कल सोने-चाँदी के सिक्कों के साथ काग़ज़ के सरकारी नोट

मिंगवंश के समय का कागजी नोट।

चलते हैं उसी तरह चीन के मिंग राजाओं ने भी काग़जी नोट चलाये।

प्रथम तारतारी सम्राट के दरबारी लोग।

सम्राट चेनलुंग-१७३५ ई० में चीन की गद्दी पर बैठा। उसने ६० वर्ष तक राज्य किया। सब से पहले

सम्राट चेनतुङ्ग।

उसने चीनी तुर्किस्तान को जीता। फिर और प्रदेश जीते। उसके समय में चीनी साम्राज्य का विस्तार सब से अधिक हो गया।

सेंगकुओ पान।

चीन में विदेशियों की छेड़खानी से चीन के कई भागों में अराजकता छा गई। दक्षिण की ओर तैपिंग विद्रोह उठ खड़ा हुआ। इनका धार्मिक विश्वास कुछ कुछ प्राटेस्टेंट ईसाइयों से मिलता जुलता था। इन्होंने विद्रोह से पहले अच्छा संगठन कर लिया। इनकी फौज में ६ लाख मर्द और ५ लाख स्त्रियाँ थीं। इनके विद्रोह को दबाने के लिये वृद्ध सेंगकुओपान ने स्वयं सेवकों की फौज संगठित की। इस काम में उन्होंने बड़ी वीरता और कार्य कुशलता दिखलाई।

ली हुँग चान।

ली हुँग चान ने तैपिंग विद्रोह को दबाने के लिये दूसरी स्वयं सेवक सेना इकट्ठी की। इस सेना को शंघाई और दूसरे स्थानों में अपूर्व सफलता मिली।

मांचू वंश की अन्तिम शासक साम्राज्ञी जमी

संसार में चीन का आर्थिक स्थान
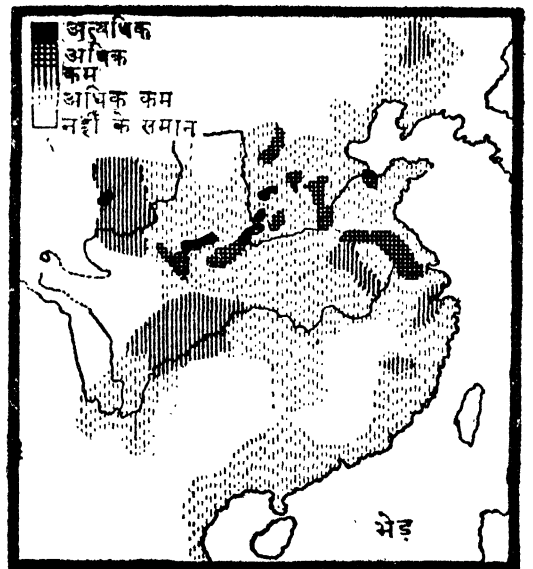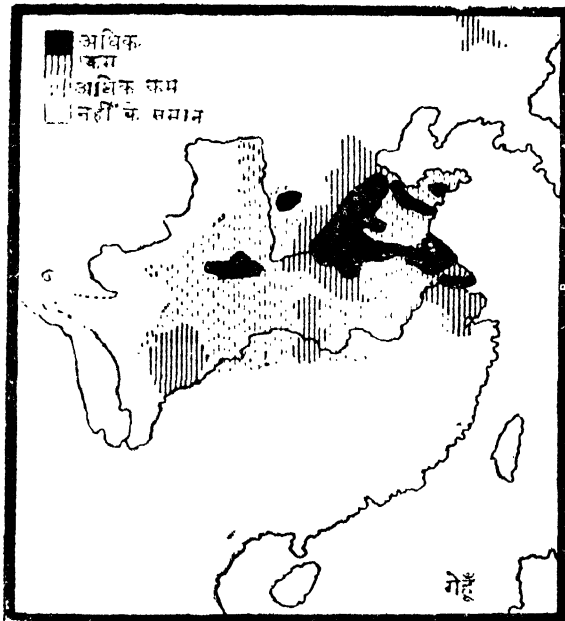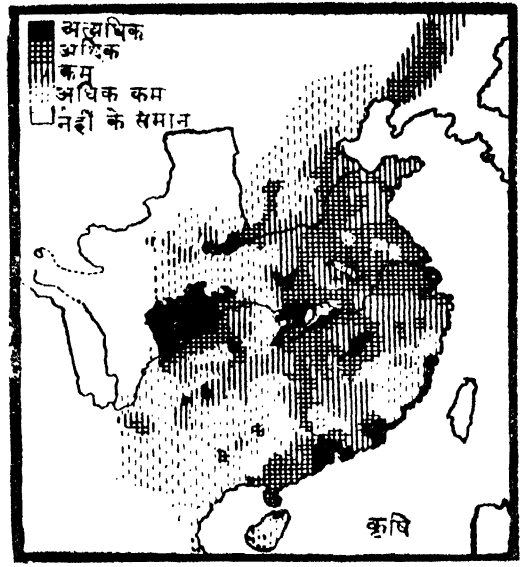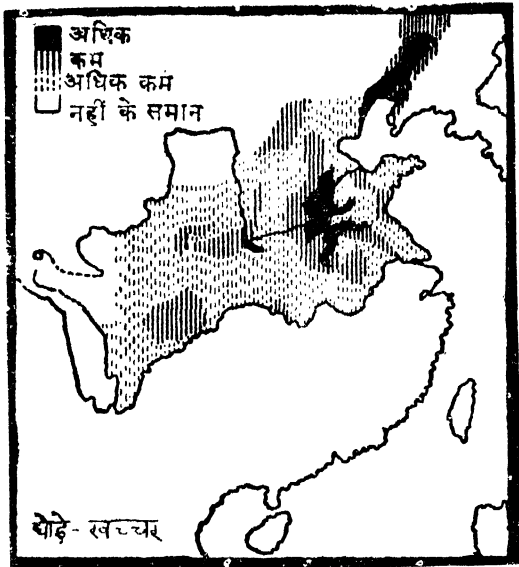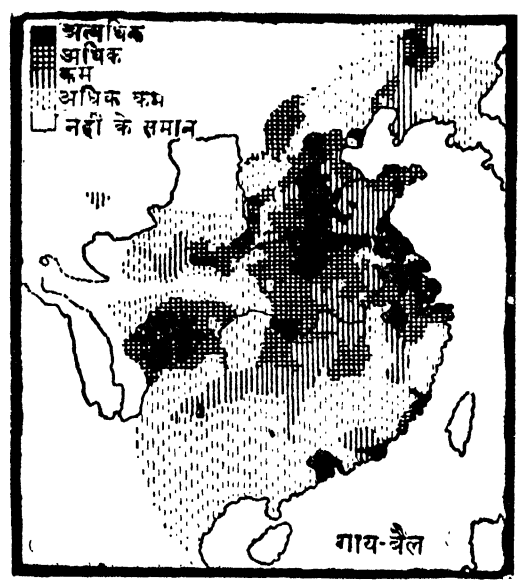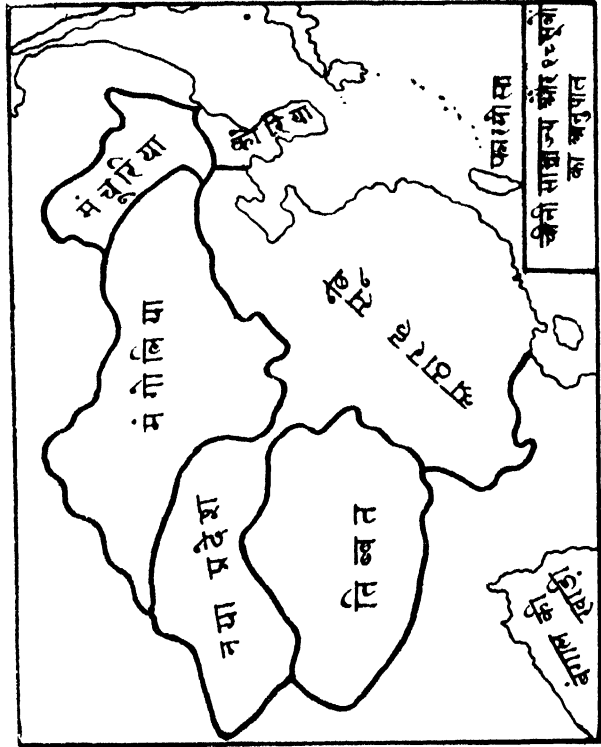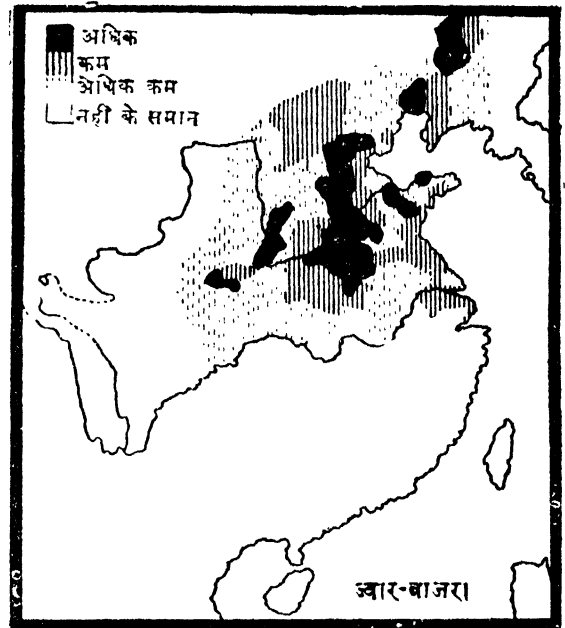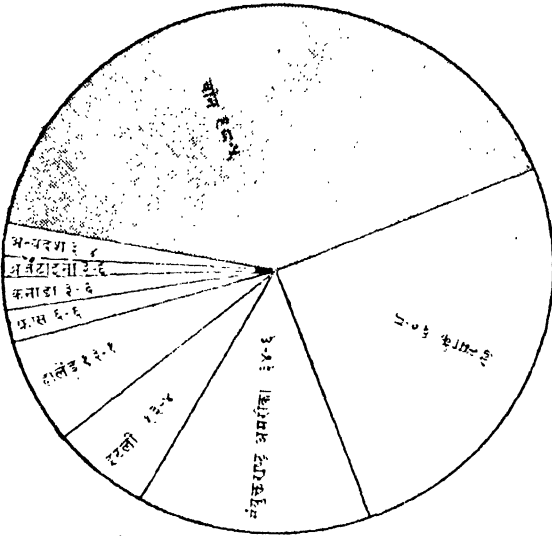
संसार में अंडों की उपज (१० लाख दर्जन)

संसार में चावल की उपज

संसार के प्रधान देशों के गाय बैल

संसार में रेशम की उपज